बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

# सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 23 ● अंक: 247 ● नई दिल्ली ● शुक्रवार 03 अक्तूबर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

## संयुक्त संपत्ति पर पति का एकमात्र दावा खारिज

**नई दिल्ली ।** दिल्ली हाई कोर्ट ने हाल ही में अपने आदेश में कहा कि पति-पत्नी के नाम पर संयुक्त रूप से खरीदी गई संपत्ति पर पति केवल ईएमआई भुगतान के आधार पर एकल स्वामित्व का दावा नहीं कर सकता। न्यायमूर्ति अनिल क्षेत्रपाल और न्यायमूर्ति हरीश वैद्यनाथन शंकर की पीठ ने 22 सितंबर को यह टिप्पणी की। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि संयुक्त नाम पर पंजीकृत संपत्ति में दोनों का बराबर अधिकार है। पति का ऐसा दावा बेनामी संपत्ति लेनदेन (निषेध) अधिनियम, 1988 की धारा-4 का उल्लंघन होगा, जो वास्तविक मालिक होने का दावा करने वाले को अन्य के विरुद्ध मुकदमा करने से रोकता है। यह फैसला महिला की याचिका पर आया, जिसमें उसने अतिरिक्त राशि के 50 प्रतिशत पर दावा किया .

# पीएम और राष्ट्रपति ने राजघाट पर बापू को दी श्रद्धांजलि, दिया संदेश

**नई दिल्ली** आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 156वीं जयंती है। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, विपक्ष के नेता राहुल गांधी समेत तमाम नेता राजघाट पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने उनकी प्रतिमा को नमन किया और पुष्प अर्पित किए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को गांधी जयंती के अवसर पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता के आदर्शों ने मानव इतिहास की दिशा को बदल दिया और आज भी भारत के विकास की दिशा तय कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि गांधीजी ने दिखाया कि साहस और सादगी बड़े बदलाव के उपकरण बन सकते हैं। उन्होंने सेवा और करुणा की शक्ति में विश्वास रखा, जो लोगों को सशक्त बनाने का मूल आधार है। उन्होंने कहा, गांधी जयंती प्यारे बापू के असाधारण जीवन को श्रद्धांजलि अर्पित करने का दिन है, जिनके आदर्शों ने मानव इतिहास का मार्ग बदल दिया। उन्होंने दिखाया कि साहस और सादगी कैसे बड़े बदलाव ला सकते हैं। वह सेवा और करुणा को लोगों को सशक्त बनाने के जरूरी माध्यम मानते थे। हम उनका रास्ता अपनाकर विकसित भारत के निर्माण की ओर बढ़ेंगे। दो अक्तूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में जन्मे मोहनदास करमचंद गांधी अहिंसा और सत्याग्रह के प्रवर्तक थे। उनके विचारों ने लाखों भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। 30 जनवरी 1948 को नई दिल्ली में गांधी स्मृति स्थल पर नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी थी। भारत की स्वतंत्रता के कुछ महीने बाद यह घटना हुई। उनका जीवन और बलिदान दुनियाभर में शांति और मानव गरिमा का प्रतीक बना हुआ है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने भी महात्मा गांधी की जयंती पर राजघाट पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इससे पहले गांधी जयंती के मौके पर राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा, गांधी जयंती हम सभी के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों और जीवन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करने का अवसर है। गांधीजी ने विश्व को शांति, सहिष्णुता और सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया जो संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत है। वह आजीवन अस्पृश्यता, निरक्षरता, नशाखोरी और अन्य सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प से समाज के कमजोर से कमजोर व्यक्ति को संबल और शक्ति प्रदान की। राष्ट्रपति ने कहा, नैतिकता और सदाचार में उनका अटूट विश्वास था जिसका उन्होंने आजीवन पालन किया और जन समुदाय को भी उस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। एक स्वावलंबी, आत्मनिर्भर और शिक्षित भारत के निर्माण के लिए उन्होंने चरखा चलाकर आत्मनिर्भरता का संदेश दिया। अपने आचरण एवं उपदेशों के माध्यम से वे सदैव श्रम की गरिमा को प्रतिष्ठित करते रहे। उनके जीवन-मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी बने रहेंगे।

आइए, गांधी जयंती के इस शुभ अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि हम सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए राष्ट्र के कल्याण और प्रगति के लिए समर्पित रहेंगे और एक स्वच्छ, समर्थ, सशक्त व समृद्ध भारत का निर्माण करके गांधी जी के सपनों को साकार करेंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, आज दो अक्तूबर है, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती है। यह पूरी दुनिया के लिए शोध और जिज्ञासा का विषय रहा है कि क्या केवल सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। लेकिन भारत ने यह कर दिखाया। इतना ही नहीं, स्वदेशी का भी आजादी की लड़ाई में बहुत बड़ा योगदान रहा... भारत की आजादी की लड़ाई ने दिखाया कि सत्य, अहिंसा और स्वदेशी के सहारे भी सदियों की गुलामी से आजादी मिल सकती है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गांधी जयंती के अवसर पर शासन सचिवालय में स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी राजघाट पर महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए और उन्हें श्रद्धांजलि दी। अपनी एक्स पोस्ट में राहुल गांधी ने लिखा, सत्य, अहिंसा और सौहार्द के सिद्धांतों से भारत को एकजुट करने वाले बापू के आदर्श हमें नफरत के सामने शांति, भाईचारे, सच्चाई और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर उन्हें सादर नमन।

### शांति, भाईचारे और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे बापू: राहुल गांधी

**कांग्रेस** नेता राहुल गांधी ने भी राजघाट पर महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए और उन्हें श्रद्धांजलि दी। अपनी एक्स पोस्ट में राहुल गांधी ने लिखा, सत्य, अहिंसा और सौहार्द के सिद्धांतों से भारत को एकजुट करने वाले बापू के आदर्श हमें नफरत के सामने शांति, भाईचारे, सच्चाई और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर उन्हें सादर नमन।

## मुनव्वर फारूकी की हत्या का प्लान: घर की रेकी कर चुके थे



**नई दिल्ली** दिल्ली पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस टीम ने कालिंदी कुंज के पुश्ता रोड पर एक एनकाउंटर के दौरान दो शूटरों को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार, गिरफ्तार अपराधियों की पहचान राहुल (पानीपत, हरियाणा) और साहिल (भिवानी, हरियाणा) के रूप में हुई है। दोनों बदमाश रोहित गोदारा-गोल्डी बराड़-वीरेंद्र चारण गिरोह से जुड़े हुए थे और मशहूर स्टैंड-अप कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी की हत्या की साजिश रच रहे थे। फारूकी ने 2024 में रियलिटी शो बिग बॉस जीता और इंस्टाग्राम पर उनके 14.2 मिलियन फॉलोअर्स हैं। पुलिस को सूचना मिली थी कि हरियाणा ट्रिपल मर्डर केस के आरोपी दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी इलाके में मौजूद हैं। पुलिस ने रात करीब 3 बजे उन्हें रोकने का प्रयास किया, लेकिन बाइक सवार अपराधियों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दोनों अपराधियों के पैर में गोली लगी और उन्हें गिरफ्तार कर अस्पताल में भर्ती कराया गया। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस टीम को सूचना मिली कि हरियाणा के तिहरे हत्याकांड के आरोपी दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी के आसपास घूम रहे हैं। कालिंदी कुंज इलाके के पुश्ता रोड पर जाल बिछाया गया। तड़के करीब 3 बजे पुश्ता रोड पर एक बाइक आती दिखाई दी, जिसे रुकने का इशारा किया गया। लेकिन बाइक सवार बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लग गई। इसके बाद राहुल और साहिल नाम के दो बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के मुताबिक, राहुल दिसंबर 2024 में यमुनानगर, हरियाणा में हुए ट्रिपल मर्डर में शामिल था और पहचान उजागर न होने की वजह से फरार था। इसके अलावा, दोनों अपराधी रोहित गोदारा, गोल्डी बराड़ और वीरेंद्र चारण के इशारे पर मुंबई और बेंगलुरु में एक सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर की हत्या की योजना बना रहे थे। जांचकर्ताओं ने बताया कि दोनों विदेशी तस्कर रोहित गोदारा के निर्देश पर काम कर रहे थे और गोल्डी बराड़ व वीरेंद्र चरण के साथ मिलकर मुनावर फारुकी की हत्या की योजना बना रहे थे। घटनास्थल से अपराधियों का इस्तेमाल किया गया बाइक और हथियार भी जब्त कर लिया गया है। दिल्ली पुलिस ने कहा है कि दोनों के खिलाफ आगे की कानूनी कार्रवाई जारी है।

## पश्चिमी और बाहरी दिल्ली के 21 जलस्रोतों को मिलेगा पुनर्जीवन



दिल्ली लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने पश्चिमी और बाहरी दिल्ली के 21 जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने की योजना बनाई है। इसका मकसद केवल सौंदर्यीकरण भर नहीं बल्कि प्राकृतिक संसाधन के रूप में उपयोग कर बाढ़ नियंत्रण और जलभराव से मुक्ति भी दिलाना है। योजना के तहत जलस्रोतों को तीन बड़े उप-बेसिन अलीपुर, नजफगढ़ और कंझावला में बांटा गया है। साथ ही, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के लिए विशेषज्ञ सलाहकारों को लगाया गया जिन्होंने नजफगढ़ बेसिन की गहन जांच के दौरान 21 तालाब और झीलें चिह्नित कीं। इनमें से 14 जलस्रोत दिल्ली पार्क्स एंड गार्डन सोसाइटी के अधीन हैं जबकि बाकी डीडीए, दिल्ली जल बोर्ड और अन्य एजेंसियों के पास हैं।

अधिकारियों का मानना है कि ये जलस्रोत पानी रोकने और संग्रह करने की बड़ी क्षमता रखते हैं जिससे आसपास के इलाकों में जलभराव और बाढ़ जैसी समस्या काफी हद तक रोकी जा सकेगी। अधिकारियों ने बताया कि भलस्वा झील को पुनर्जीवन का पहला केंद्र चुना गया है। इस झील की हालत बेहद खराब है। आसपास की डेयरी कॉलोनी से निकलने वाला गोबर और ठोस कचरा यहां पानी को दूषित कर रहा है। अब इसे संवारने के लिए डी-सिल्टिंग, प्रदूषक हटाने, तटबंध मजबूत करने, पौधरोपण, वॉकिंग ट्रैक और बाउंड्री वॉल बनाने जैसे कदम उठाए जाएंगे। साथ ही, गोबर निपटान के लिए अलग स्थान बनाया जाएगा ताकि झील दोबारा प्रदूषित न हो। योजना का मकसद केवल तालाबों को चमकाना नहीं बल्कि उन्हें दिल्ली के जल चक्र से जोड़ना है। इन जलस्रोतों को पानी की नालियों से इंटरलिंक किया जाएगा ताकि बारिश का अतिरिक्त पानी यहां जमा होकर भूजल रिचार्ज कर सके। विशेषज्ञों का कहना है कि यह पहल दिल्ली के लिए स्थायी जल प्रबंधन की दिशा में बड़ा कदम होगी। बवाना, मयापुरी, नरेला और धीरपुर के तालाबों को भी पुनर्जीवित कर आसपास की आबादी को जलभराव की समस्या से राहत मिलेगी। परियोजना के तहत सिर्फ पानी रोकने की व्यवस्था ही नहीं बल्कि लोगों को प्रकृति से जोड़ने का भी ख्याल रखा जाएगा। पार्क, कुदरती ट्रेल, मछली पालन, बोटिंग जैसी गतिविधियां विकसित करने की योजना है। 27 जगहों पर पार्क और तालाब विकसित करने की रूपरेखा भी तय की गई है। इससे स्थानीय लोगों को मनोरंजन के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन का लाभ मिलेगा। विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले तीन दशकों में तेजी से हुए शहरी विस्तार ने राजधानी की प्राकृतिक जल प्रणालियों को काफी खराब किया है। जहां कभी तालाब और नाले थे वहां अब कंक्रीट की बस्तियां और सड़कें हैं।

## सराय काले खां परिसर से मिलेंगी सात परिवहन सेवाएं, सफर होगा आसान... समय की भी बचत



**नई दिल्ली** दिल्ली-एनसीआर के लोगों को सराय काले खां पर बने नमो भारत कॉरिडोर के स्टेशन से जल्द ही सार्वजनिक परिवहन के एक साधन से दूसरे में सफर करने की सुविधा मिलेगी। आनंद विहार के बाद सराय काले खां पर तैयार हो रहा स्टेशन राजधानी के ट्रांसपोर्ट नेटवर्क को नया रूप देगा। यहां एक ही परिसर में दिल्ली मेट्रो, सिटी बस, इंटरस्टेट बस, रेल, टैक्सी, ऑटो और ई-रिक्शा की सेवाएं उपलब्ध होंगी। यात्रियों को दिल्ली से मेरठ, पानीपत-करनाल और अलवर तक जाने के लिए अलग-अलग साधनों के चक्कर नहीं लगाने होंगे। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर स्टेशन को बेहद आधुनिक बनाया गया है। 215 मीटर लंबे और 50 मीटर चौड़े इस स्टेशन पर छह प्लेटफॉर्म और चार ट्रैक एक ही स्तर पर हैं। यहां 14 लिफ्ट और 18 एस्केलेटर लगाए गए हैं ताकि बड़ी संख्या में आने वाले यात्रियों को भी परेशानी न हो। सराय काले खां से हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन को जोड़ने के लिए 280 मीटर लंबा फुटओवर ब्रिज बनाया गया है जिसमें छह ट्रेवलेटर होंगे। इसी तरह का लिंक आईएसबीटी तक भी बनाया जा रहा है।

यात्रियों की सहज आवाजाही के लिए बाहर एक बड़ा सार्वजनिक प्लाजा तैयार किया गया है। यहां 40 से अधिक वाहनों के लिए पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ जोन और 15 बसों के लिए बस इंटरचेंज की सुविधा होगी। इससे यात्रियों को एक से दूसरी सेवा लेने में समय और ऊर्जा की बचत होगी। नमो भारत स्टेशन को सीधे दिल्ली मेट्रो की पिंक लाइन से जोड़ा गया है। साथ ही, यह दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे, बारापुला फ्लाईओवर, रिंग रोड और डीएनडी लिंक रोड जैसे प्रमुख मार्गों से भी कनेक्ट है। खास बात यह है कि यात्रियों के लिए अलग पैदल मार्ग बनाए गए हैं ताकि उन्हें वाहनों की भीड़ में चलना न पड़े। एनसीआरटीसी ने यहां एक सेंट्रल इंटरचेंज प्लाजा भी तैयार किया है जो मेट्रो, बस, रेलवे और ऑटो-टैक्सी पार्किंग के बीच सीधा कनेक्शन देगा। सराय काले खां को तीनों प्राथमिक आरआरटीएस कॉरिडोर का संगम स्थल बनाया गया है। यात्री बिना ट्रेन बदले सीधे अलग-अलग कॉरिडोर में जा सकेंगे यानी दिल्ली से बैठा यात्री मेरठ जाने के बाद वहीं से अलवर या करनाल कॉरिडोर में सफर जारी रख सकता है। फिलहाल दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर का काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका 14 किलोमीटर लंबा दिल्ली खंड सराय काले खां, न्यू अशोक नगर और आनंद विहार से होकर गुजरेगा। इसमें नौ किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड और पांच किलोमीटर अंडरग्राउंड होगा। आने वाले वर्षों में जब करनाल और अलवर कॉरिडोर भी जुड़ेंगे तो सराय काले खां न केवल दिल्ली बल्कि पूरे एनसीआर का सबसे बड़ा ट्रांसपोर्ट हब बन जाएगा।

## दिव्यांग छात्रों के लिए 10 नए केंद्रों को मंजूरी

**नई दिल्ली** शिक्षा निदेशालय ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए एक महत्वपूर्ण पहल के तहत 10 नए संसाधन केंद्रों के शुभारंभ और संचालन को मंजूरी दी है। इन केंद्रों का उद्देश्य सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों (सीडब्ल्यूडी) को चिकित्सीय और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करना है। इन संसाधन केंद्रों के सुचारू संचालन के लिए शिक्षा निदेशालय ने 18 नवंबर, 2022 के आदेश के तहत जारी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) को लागू किया है, जो नए केंद्रों पर भी लागू होगी। संसाधन केंद्र सप्ताह में छह दिन (राजपत्रित अवकाश, दूसरे शनिवार और रविवार को छोड़कर) सुबह नौ से शाम पांच बजे तक कार्य करेंगे। सभी केंद्रों में सीसीटीवी कवरेज अनिवार्य होगा और बच्चों की सुरक्षा, स्वच्छता और केंद्रों के रखरखाव को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। विशेष शिक्षा शिक्षक (एसईटी) और स्कूल के विभागाध्यक्ष (एचओएस) बच्चों के मूल्यांकन, रेफरल प्रक्रिया और चिकित्सा सत्रों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यदि एसईटी अनुपलब्ध हो, तो एचओएस द्वारा नामित अन्य शिक्षक बच्चों को संसाधन केंद्र तक ले जाएंगे और उनके अभिभावकों को आवश्यक जानकारी प्रदान करेंगे। शिक्षा निदेशालय ने स्पष्ट किया है कि बच्चों की सुरक्षा और केंद्रों के रखरखाव में किसी भी प्रकार की लापरवाही को गंभीरता से लिया जाएगा। नोडल अधिकारी के रूप में विभागाध्यक्ष को केंद्र की दैनिक गतिविधियों पर नजर रखने का निर्देश दिया गया है। रेफरल प्रक्रिया में चिकित्सा रिकॉर्ड और यूडीआईडी प्रमाणपत्र जैसे दस्तावेजों को एसईटी और एचओएस द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित किया जाएगा। दिल्ली के शिक्षा मंत्री ने इस पहल को समावेशी शिक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है। उन्होंने कहा कि ये संसाधन केंद्र विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सशक्त बनाने और उनकी शिक्षा को समृद्ध करने में मदद करेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि हर बच्चा अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचे। शिक्षा उपनिदेशक (एक्स-कैडर) के पद पर कई प्रधानाचार्यों को लंबे समय के इंतजार के बाद तत्काल प्रभाव से पदोन्नत करने की मंजूरी मिली है। उपराज्यपाल ने एक जुलाई को आयोजित विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक में की गई सिफारिश के तहत इसकी मंजूरी दी है। यह पदोन्नति यूपीएससी के आधार पर की गई है और यह सातवें वेतन आयोग एवं केंद्रीय सिविल सेवा (संशोधित वेतन) नियम, 2017 के तहत वेतन मैट्रिक्स के स्तर 12 के अनुसार होगी, जिसमें समय-समय पर स्वीकार्य सामान्य भत्ते शामिल हैं। शिक्षा निदेशालय के अनुसार, यह पदोन्नति इस शर्त पर दी गई है कि संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कोई सतर्कता मामला लंबित नहीं होना चाहिए। पदोन्नत अधिकारियों को वेतन निर्धारण के लिए केंद्र सरकार के निर्देशों के अनुसार, एक माह के भीतर एफआर-22 के तहत विकल्प चुनने का अधिकार होगा। आर्थिक लाभ पदोन्नति के बाद उप शिक्षा निदेशक (एक्स-कैडर) के पद पर कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से लागू होगा। यह आदेश स्पष्ट करता है कि पदोन्नति का प्रभाव केवल भविष्य में लागू होगा, भले ही रिक्तियां पूर्व वर्षों से संबंधित हों।

## स्वामी चैतन्यानंद: आश्रम में मिलीं गंदी फिल्में, खिलौने व अश्लील साहित्य

**नई दिल्ली** दिल्ली के वसंतकुंज इलाके में 17 छात्राओं के यौन शोषण मामले में अब तक सबसे बड़ा खुलसा सामने आया है। आरोपी स्वयंभू स्वामी चैतन्यानंद उर्फ पार्थ सारथी ने कुछ पीड़ितों से दुबई के शेख के लिए लड़की का इंतजाम करने के बारे में पूछा था।

आरोपी ने छात्रा से उसकी जूनियर व अन्य दोस्त के बारे में बताने को कहा था। ये सनसनीखेज खुलासा आरोपी की पीड़ित छात्राओं के साथ हुई चैट के बाहर आने पर हुआ है। आरोपी की पीड़ित छात्राओं के साथ की गई काफी मात्रा में चैट उसके मोबाइल से मिली है।

दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार आरोपी के एक मोबाइल को रिट्रीव कराया गया था। उस मोबाइल से छात्राओं के साथ अश्लील चैट की 1000 से ज्यादा चैट मिली है। एक चैट में वह पीड़ित छात्रा से पूछ रहा है कि... वह उससे क्यों नाराज है।

आरोपी छात्राओं को हर रोज गुड मॉर्निंग के मैसेज भेजता था। एक चैट में वह एक छात्रा को बेटी भी कह रहा है। एक चैट में वह एक छात्रा को कहता है कि वह उसके पास सोने नहीं आई। एक अन्य चैट में वह पीड़िता को कह रहा है कि वह डिस्को कर रहा है। वह छात्रा को डिस्को डांस में आकर ज्वाइन करने के लिए पूछता है। पुलिस का काफी ऐसी चैट मिली है कि उसमें बहुत ज्यादा अश्लील बातें कर रखी हैं। उसने एक छात्रा से पूछा कि दुबई का शेख जिस्मानी संबंध बनाना चाहता है, उसके कोई दोस्त या जूनियर है। इस पर पीड़िता बिल्कुल मना कर देती है। पुलिस की जांच में ये बात सामने आई है कि आरोपी छात्राओं को महंगे गिफ्ट भी देता था। उसने छात्राओं को महंगे कपड़े व गहने दिलवाए हैं। वह परफ्यूम भी गिफ्ट में देता था। पुलिस की जांच में ये पता लगा है कि आरोपी छात्राओं के साथ अश्लील हरकतें आश्रम से बाहर करता था। वह छात्राओं को उत्तराखंड व दिल्ली से बाहर ले जाता था। पुलिस को जांच में ये भी पता लगा है कि वह कुछ छात्राओं को भारत से बाहर भी ले गया है। पुलिस टीमें पुष्टि के लिए बागेश्वर, अल्मोड़ा और अन्य उन जगहों पर गई, जहां फरारी के दौरान वह रुका था। पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि जांच के दौरान पुलिस टीम बुधवार को आरोपी पार्थसारथी को लेकरश्रीसिम पहुंची और उसके परिसर की फिर से गहन तलाशी ली।

# संस्कृति, शक्ति और सत्य का उत्सव है दशहरा

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल दशमी को 'विजयादशमी' पर्व के रूप में मनाया जाता है, जिसे दशहरा भी कहा जाता है। इस वर्ष उदया तिथि के अनुसार दशहरा 2 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। समस्त भारत में दशहरा भगवान श्रीराम द्वारा लंकापति रावण के वध के रूप में अर्थात् बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में तथा आदि शक्ति दुर्गा द्वारा महाबलशाली राक्षसों महिषासुर व चण्ड-मुण्ड का वध किए जाने के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय पाने के लिए इसी दिन प्रस्थान किया था। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि हिन्दू राजा अक्सर इसी दिन विजय के लिए प्रस्थान किया करते थे। इसी कारण इस पर्व को विजय के लिए प्रस्थान का दिन भी कहा जाता है और इसे क्षत्रियों का त्यौहार भी माना गया है। इस दिन अपराजिता देवी की पूजा भी होती है। मान्यता है कि सर्वप्रथम श्रीराम ने समुद्र तट पर शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ किया था और तत्पश्चात् दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान करते हुए विजय प्राप्त की थी। तभी से दशहरे को असत्य पर सत्य तथा अधर्म पर धर्म की जीत के पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। दो शब्दों दश तथा हरा से मिलकर बना है दशहरा। दश का अर्थ है दस तथा हरा का अर्थ है ले जाना। इस प्रकार दशहरे का मूल अर्थ है दस अवगुणों या बुराईयों को ले जाना यानी इस अवसर पर अपने भीतर के दस अवगुणों को खत्म करने का संकल्प लेना। दरअसल हर इंसान के भीतर रावण रूपी अनेक बुराईयां मौजूद होती हैं और सभी पर एक बार में विजय पाना संभव भी नहीं है, इसलिए दशहरे पर ऐसी ही कुछ बुराईयों का नाश करने का संकल्प लेकर इस पर्व की सार्थकता सुनिश्चित की जा सकती है। दशहरे को रावण पर राम की विजय अर्थात् आसुरी शक्तियों पर सात्विक शक्तियों की विजय तथा अन्याय पर न्याय की, बुराई पर अच्छाई की, असत्य पर सत्य की, दानवता पर मानवता की, अधर्म पर धर्म की, पाप पर पुण्य की और घृणा पर प्रेम की जीत के रूप में मनाया जाता है। दशहरे का धार्मिक के साथ सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय एकता का पर्व है। सही अर्थों में यह पर्व अपने भीतर छिपे दुर्गुणों रूपी रावण को मारकर तमाम अवगुणों पर विजय प्राप्त करने का शुभकाल है। दशहरे के उत्सव का संबंध नवरात्रों से जोड़कर देखा जाता रहा है। शक्ति की उपासना का यह पर्व सनातन काल से ही शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक नौ तिथि, नौ नक्षत्र और नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ मनाया जाता है। माना जाता है कि नवरात्रों में देवी की शक्ति से दसों दिशाएं प्रभावित होती हैं और देवी दुर्गा की कृपा से ही दसों दिशाओं पर विजय प्राप्त होती है, इसलिए भी नवरात्रों के बाद आने वाली दशमी को 'विजयादशमी' कहा जाता है। नवरात्रों के नौ दिनों में हम देवी के नौ रूपों की



पूजा करते हैं लेकिन ऐसा करते हुए हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे समाज में सभी नारियां दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती या काली का ही रूप हैं, इसलिए इन पर्वों की सार्थकता सही मायनों में तभी सिद्ध हो सकती है, जब हम अपने समाज में देवी स्वरूपा नारी को उचित मान-सम्मान दें, उसे गर्भ में ही मौत की नींद सुलाने से बचाएं, शिक्षित करके उन्हें उनका हक दिलाएं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाएं और सम्मानित जीवन जीने का अधिकार प्रदान करें। शारदीय नवरात्रों का अहम अंग बनकर प्रतिवर्ष दुर्गोत्सव को पूर्णता प्रदान करता बुराई पर अच्छाई तथा असत्य पर सत्य की जीत को परिभाषित करता यह पावन पर्व हमें मानवीय मूल्यों के संरक्षण में सर्वत्र विजयी होने का संदेश देता है। मान्यता है कि आदि शक्ति दुर्गा ने दशहरे के ही दिन महाबलशाली असुर सम्राट महिषासुर का वध किया था। जब महिषासुर के अत्याचारों से भूलोक और देवलोक त्राहि-त्राहि कर उठे थे, तब आदि शक्ति मां दुर्गा ने 9 दिनों तक महिषासुर के साथ बहुत भयंकर युद्ध किया था और दसवें दिन उसका वध करते हुए उस पर विजय हासिल की थी। इन्हीं 9 दिनों को दुर्गा पूजा (नवरात्र) के रूप में एवं शक्ति संचय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है और महिषासुर पर आदि शक्ति मां दुर्गा की विजय वाले दसवें दिन को विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है। श्राद्धों के समाप्ति वाले दिन मिट्टी के किसी बर्तन में मिट्टी में जौ बोए जाने की परम्परा बहुत से क्षेत्रों में देखने को मिलती है। दशहरे के दिन तक जौ उगकर काफी बड़े हो जाते हैं, जिन्हें 'ज्वारे' कहा जाता है। मिट्टी के जिस बर्तन में जौ बोए जाते हैं, उसे स्त्री के गर्भ का प्रतीक माना गया है और ज्वारों को उसकी संतान। दशहरे के दिन लड़कियां अपने भाईयों की पगड़ी अथवा सिर पर ज्वारे रखती हैं और भाई उन्हें कोई उपहार देते हैं। सही मायनों में इस पर्व की सार्थकता तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब हम इस अवसर पर आत्मचिंतन करते हुए अपने भीतर की बुराईयों रूपी रावण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उनका विनाश करने का प्रयास करें।

सम्पादकीय...

## वैचारिक विरोधी और संघ

**यह** संयोग ही है कि ठीक सौ साल पहले 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई, ठीक उसके कुछ ही महीने बाद छब्बीस दिसंबर 1925 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। सौ साल की यात्रा को जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि जोर-शोर से शुरू हुआ भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन भारत भूमि पर दम तोड़ता नजर आ रहा है, जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा लगातार आगे बढ़ रही है। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक मोर्चे पर संघ की वैचारिकी की प्रगति यात्रा जारी है। एक ही वक्त पर शुरू दोनों वैचारिकी में एक विशेष अंतर रहा। वाम आंदोलन के निशाने पर सदा संघ की विचारधारा और संगठन रहा। संघ के खिलाफ कभी सत्ता के सहयोग से तो कभी किसी और तरीके दुष्प्रचार खूब फैलाया गया। उसी में एक विचार ऐसा है कि संघ मुसलमानों के खिलाफ है। वैचारिक और सामाजिक मोर्चे पर यह भी स्थापित करने की कोशिश की गई कि संघ भारतभूमि से मुस्लिम धर्म का समूल खात्मा चाहता है। लेकिन हकीकत कुछ और है। संघ की प्रतिनिधि सभा के सदस्य और वरिष्ठ कार्यकर्ता इंद्रेश कुमार जी के संयोजन में साल 2002 से 'राष्ट्रीय मुस्लिम मंच' नाम का संगठन काम कर रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य इस्लाम मानने वाले भारतीय लोगों के बीच 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के संदर्भ में भारतीय राष्ट्रीयता के विचार को बढ़ावा देना है। संघ का कोई घोषित या अघोषित उद्देश्य नहीं है कि भारत भूमि मुस्लिम लोगों से मुक्त हो। संघ का प्रयास है कि भारत के मुसलमानों को लेकर स्थापित छवि बदले और राष्ट्र निर्माण में भी उनकी भूमिका हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर 'गुरू' जी रचित किताब 'ब्रंच ऑफ थॉट' का हवाला देकर अक्सर संघ को मुस्लिम विरोधी और सांप्रदायिक होने का प्रयास किया जाता है। वामपंथी विचारधारा के बुद्धिजीवियों को जब भी संघ पर हमला करना होता है, 1966 में प्रकाशित इसी किताब का वे हवाला देते हैं। संघ के मौजूदा सरसंघचालक मोहन राव भागवत जी इस बारे में अपनी राय खुलकर जाहिर कर चुके हैं। सात साल पहले सितंबर 2018 में दिल्ली के विज्ञान भवन में हुई तीन दिनों की विशेष व्याख्यान माला के आखिरी दिन 20 सितंबर को संघ प्रमुख ने श्रोताओं से आमंत्रित प्रश्नों का जवाब दिया था। उसमें 'ब्रंच ऑफ थॉट' को लेकर भी एक प्रश्न पूछा गया था। उस प्रश्न के जवाब में मोहन राव भागवत ने कहा था, 'रही बात, %बंच ऑफ थॉट्स% की, तो बातें जो बोली जाती हैं वे परिस्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संदर्भ में बोली जाती हैं। वे शाश्वत नहीं रहतीं।' इसी सवाल के जवाब में भागवत जी ने आगे कहा था, आरएसएस कोई संकीर्ण संगठन नहीं है. समय के साथ हमारे विचार और इनका प्रकटीकरण भी बदलता है। संघ प्रमुख मुसलमान समुदाय को लोगों को भी अपना ही मानते हैं। इसी व्याख्यान माला में उन्होंने कहा था कि, 'हम एक देश की संतान है, भाई-भाई जैसे रहें। इसलिए संघ का अल्पसंख्यक शब्द को लेकर रिजर्वेशन है। संघ इसको नहीं मानता. सब अपने हैं, दूर गए तो जोड़ना है।' संघ को लेकर एक आरोप लगता है कि वह जातिवादी है। विशेषकर संघ विरोधी बुद्धिजीवी कहने से नहीं हिचकते कि संघ में उच्च जातियों का वर्चस्व है। के एस भारती द्वारा संपादित और 1988 में प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमिनेंट थिंकर' के सातवें खंड में दिए विवरण के अनुसार महात्मा गांधी 1934 में वर्धा में आयोजित संघ के एक शिविर का दौरा किया था। तब वे बगल में ही सेवाग्राम आश्रम में ठहरे हुए थे। संघ के शिविर का जिज्ञासावश दौरा करने पहुंचे गांधी जी को यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि गांधीजी को इस बात से और भी आश्चर्य हुआ कि वर्धा शिविर में अस्पृश्यता, जातिगत उपेक्षा या अन्य भेदभावपूर्ण तौर-तरीके बिलकुल नहीं थे। गांधी जी के दौरे वक्त संघ के शिविर में अप्पाजी जोशी थे। इससे गांधी जी बहुत प्रभावित हुए थे। संघ और गांधी के संबंधों को लेकर भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है। लेकिन गांधी वांग्मय में संग्रहित तथ्यों से इससे जुड़े वैचारिक कुहासे से भी भी पर्दा उठता है। गांधी वांग्मय के 87वें खंड में मिलता है। इसके अनुसार अप्रैल 1947 में दिल्ली में हिंदू-मुस्लिम एकता के संदर्भ में हुई एक प्रार्थना सभा में, गांधीजी ने बताया था कि उन्हें संघ से एक पत्र मिला है, जिसमें इस बात से इनकार किया गया है कि हाल ही में गांधीजी द्वारा अपनी सभाओं में कुरान की आयतों को गीता की आयतों के साथ रखने के विरोध में संघ का कोई हाथ था। गांधीजी ने कहा कि उन्हें इस खंडन के बारे में सुनकर खुशी हुई, और आगे कहा कोई भी संगठन जीवन या धर्म की रक्षा नहीं कर सकता जब तक कि वह पूरी तरह से खुले तौर पर काम न करे। सितंबर 1947 में गांधीजी नई दिल्ली में संघ कार्यकर्ताओं से मिले थे। तब गांधी जी उनसे कहा था कि वास्तव में उपयोगी होने के लिए, आत्म-बलिदान के साथ-साथ पवित्र उद्देश्य और सच्चे ज्ञान का भी समावेश होना आवश्यक है। संघ के जातिवादी होने के सवाल पर विज्ञान भवन के कार्यक्रम में भागवत जी ने कहा था कि अगर भारत में अंतरजातीय विवाहों की गणना किया जाए तो अंतरजातीय विवाह करने वालों में सबसे ज्यादा संख्या संघ के स्वयंसेवकों की होगी। संघ पर वामपंथी लोगों का विरोधी होने का भी आरोप लगता है। लेकिन संघ प्रमुख इसे भी साफ कर चुके हैं। राष्ट्र हित के संदर्भ में वाम विचारधारा पर सवाल उठने जायज हैं। वाम विचारधारा भारतीयता की धारणा को तार-तार करती है। लेकिन उसे मानने वाले लोगों से संघ कभी घृणा नहीं करता, नहीं विद्वेषभाव रखता है। संघ प्रमुख तो अब बार-बार कहते हैं कि भारत में जो भी हैं, सब अपने हैं। उन्हें अपने साथ जोड़ना है। संघ ने शताब्दी वर्ष में जो पंच प्रतिष्ठा निर्धारित की है, उसमें तीसरा 'सामाजिक समरसता' है। सामाजिक समरसता के संदर्भ में संघ का मानना है कि भारत भूमि में रहने वाले सभी लोग अपने हैं। कुछ भटके हुए हैं, उन्हें अपने साथ जोड़ना है और भारत राष्ट्र को स्वावलंबी और मजबूत बनाना है। यह तभी संभव होगा, जब समूचे भारत का समाज एक होगा।

# आरएसएस राष्ट्र निर्माण की शताब्दी यात्रा

राजनाथ सिंह

**27** सितंबर 1925 को जब डा. केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना की थी, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि आगामी सौ वर्षों में यह संगठन इतना विशाल और प्रभावशाली बन जाएगा। आरएसएस ने भारत की सामाजिक बुनियाद को मजबूत किया है, उसकी संप्रभुता की रक्षा की है, कमजोर वर्गों को सशक्त बनाया है और भारतीय सभ्यता के मूल्यों को संजोए रखा है। आरएसएस निस्वार्थ सेवा का जीवंत प्रतीक है। आरएसएस के शताब्दी उत्सव के अवसर पर उसकी यात्रा को पुनः याद करना उचित भी है और आवश्यक भी। हाल में दिल्ली में सरसंघचालक मोहन भागवत ने संघ के समावेशी विचारों पर चर्चा करते हुए कहा था, 'धर्म व्यक्तिगत पसंद का विषय है। इसमें किसी तरह का प्रलोभन या जोर-जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।' यह वक्तव्य संघ की मूल विचारधारा को प्रतिबिंबित करता है कि समाज में टकराव नहीं, सामंजस्य हो। आज भी संघ की दैनिक शाखाएं और स्वयंसेवकों के कार्यक्रम अनुशासन, आत्मबल और भारतीय संस्कृति पर गर्व करने की प्रेरणा देते हैं, जिससे श्रेष्ठ भारत के निर्माण का मार्ग सुगम होता है।

यह स्वाभाविक है कि संघ के अनुकरणीय योगदान के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से संघ को 'दुनिया का सबसे बड़ा गैर-सरकारी संगठन' बताया। 1947 में जब भारत स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, तब विभाजन की त्रासदी से बहुत जनहानि हुई थी और लाखों लोगों को विस्थापित होना पड़ा था। ऐसी भीषण परिस्थिति में संघ के स्वयंसेवक अनुशासित, संगठित और निस्वार्थ सेवकों के रूप में सामने आए। उन्होंने विस्थापितों के पुनर्वास में अनन्य योगदान दिया। विभाजन से पहले भी दूसरे सरसंघचालक श्री गुरुजी (एमएस गोलवलकर) और संघ के कई वरिष्ठ नेताओं ने पंजाब के हिंसाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया और वहां लोगों को आत्मरक्षा और राहत कार्यों के लिए संगठित किया। उस दौरान संघ की भूमिका का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि तत्कालीन हालात से घबराए कांग्रेस नेताओं को भी अपने परिवारों और समुदाय की रक्षा के लिए संघ की मदद लेनी पड़ी। स्वयंसेवकों की सेवा के कारण ही द ट्रिब्यून अखबार ने आरएसएस को 'द स्वार्ड आर्म आफ



पंजाब' कहा। संघ का समाज सेवा कार्य विभाजन के बाद भी अनवरत जारी रहा। 1984 में जब सिख विरोधी दंगे भड़काए गए और हजारों सिखों की हत्या की गई, तब संघ स्वयंसेवक सिखों की रक्षा के लिए सबसे आगे थे। लेखक खुशवंत सिंह ने इसकी पुष्टि करते हुए लिखा कि इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हिंदू-सिख एकता बनाए रखने में संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संघ के कार्यों को देखकर कहा जा सकता है कि कुछ लोगों द्वारा उस पर बहुसंख्यकवादी संगठन होने का आरोप बिल्कुल निराधार है।

स्वतंत्रता के समय भी संघ ने अल्पसंख्यकों और उनके पूजास्थलों की रक्षा में मदद की। मार्च 1947 में जब मुस्लिम लीग द्वारा उकसाई गई भीड़ श्रीहरमंदिर साहिब की ओर बढ़ी, तो तलवारों-लाठियों से लैस संघ स्वयंसेवकों ने न केवल उसका सामना किया, बल्कि उसे पीछे हटने पर मजबूर किया। तीन दिन बाद जब एक और सुनियोजित हमला श्रीहरमंदिर साहिब पर हुआ, तब भी स्वयंसेवकों ने मानव घेरा बनाकर गुरुद्वारे की रक्षा की और हमलावरों को खदेड़ा। भारत के एकीकरण में संघ के योगदान से भी बहुत लोग अवगत नहीं हैं। जब पाकिस्तान समर्थित कबाइली हमलावरों ने जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण किया, तो सरदार पटेल ने महाराजा हरि सिंह को विलय के लिए राजी करने हेतु गुरुजी की मदद मांगी। गुरुजी ने श्रीनगर जाकर हरि सिंह को तत्काल विलय के लिए मनाने का प्रयास किया। आरएसएस स्वयंसेवकों ने 1947-48 के युद्ध के दौरान सेना की सहायता की। साथ ही मीरपुर और मुजफ्फराबाद से भागे शरणार्थियों के लिए राहत कार्यों की व्यवस्था संभाली। 1954 में स्वयंसेवकों ने दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने में अग्रणी भूमिका निभाई। केआर मलकानी की पुस्तक 'द आरएसएस स्टोरी' में इसका विवरण है। पुर्तगाली सैनिकों की गोलीबारी में कई स्वयंसेवकों ने प्राण न्योछावर किए। आपातकाल के खिलाफ लाखों स्वयंसेवक संगठित होकर संविधान की रक्षा के लिए खड़े हुए। जनवरी 1976 में द इकोनमिस्ट ने लिखा था, 'इस आंदोलन की मुख्य ताकत जनसंघ और उससे जुड़ा संगठन आरएसएस है।' उस समय जब लोगों और संस्थाओं को केवल झुकने को कहा जाता था, तो वे रेंगने को तैयार थे, तब संघ के असंख्य कार्यकर्ता तानाशाही के खिलाफ खड़े हुए और लोगों को एक लोकतांत्रिक विकल्प प्रदान करने के लिए काम किया। यह संघ के लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों के प्रति संकल्प का प्रमाण है। वनवासी और हाशिए के समुदायों के उत्थान के लिए संघ कार्यों से भी यह बात पूर्णतया सिद्ध होती है। 1952 में स्थापित अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम देश का सबसे बड़ा आदिवासी कल्याण संगठन है। आरएसएस को महात्मा गांधी जी के नाम पर अक्सर निशाना बनाया जाता है। महात्मा गांधी और आरएसएस के बीच कुछ वैचारिक मतभेद अवश्य रहे, लेकिन कभी वैमनस्य का भाव नहीं रहा। 1934 में गांधीजी ने वर्धा में आरएसएस के एक शिविर का दौरा किया, जहां उन्होंने संघ के 'अनुशासन, अस्पृश्यता के पूर्ण अभाव और उच्च सादगी' की सराहना की। 16 सितंबर 1947 को गांधीजी ने दिल्ली में आरएसएस की एक सभा को संबोधित करते हुए संघ की सेवा एवं बलिदान की भावना की प्रशंसा की। 30 जनवरी, 1948 को गांधीजी की हत्या के बाद आरएसएस ने श्रद्धांजलि स्वरूप अपनी सभी शाखाएं 13 दिनों के लिए स्थगित कर दी थीं। ऐसा संघ के इतिहास में सिर्फ एक बार हुआ है। ये बातें एक-दूसरे के प्रति पारस्परिक सम्मान की गवाही देती हैं। आरएसएस ने विचारों की विविधता का हमेशा सम्मान किया है। उपनिवेशवाद के दौरान हुए कुशासन और आजादी के बाद नीतिगत उपेक्षा के कारण पूर्वोत्तर भारत और वहां के लोग अलगाववाद और उग्रवाद से जूझते रहे, लेकिन आरएसएस ने 1946 में गुवाहाटी में पहली शाखा स्थापित की और तब से इस क्षेत्र को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज जब आरएसएस एक सदी की सफल यात्रा पूर्ण कर रहा है, तब यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि राष्ट्र निर्माण में उसका योगदान अप्रतिम और अतुलनीय है। एक सदी बाद भी आरएसएस उसी भाव और समर्पण के साथ मानवता और देश की सेवा कर रहा है, जिसके साथ उसकी नींव रखी गई थी।

# स्वदेशी के बिगुल में गांधीजी की प्रेरणा, देश के प्रति हर तरह से अपनत्व की भावना

गिरीश्वर मिश्र

बुद्धिमान और सफल होने की चाह रखने वाले व्यक्ति के लिए महान नीतिज्ञ आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में बड़ी महत्वपूर्ण सीख दी गई है। इसमें कहा गया है कि सफलता के आकांक्षी व्यक्ति को अपने वर्तमान और भविष्य का भान होना चाहिए। उसे इसका भी ठीक से पता होना चाहिए कि मेरे हितैषी कौन हैं।

उसे अपनी परिस्थितियों की भी पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अपने अस्तित्व, अस्मिता और परिस्थिति का वास्तविक आकलन हो। चाणक्य कहते हैं कि इस सब पर बार-बार विचार करते रहना चाहिए। तभी व्यक्ति द्वारा सही निर्णय हो पाता है और जीवन में आने वाली समस्याओं और विघ्न-बाधाओं का निवारण करते हुए उनसे पार पाया जा सकता है। यह बात व्यक्ति ही नहीं, देश और समाज जैसी इकाई पर भी पूरी तरह लागू होती है। आत्मालोचना में किसी तरह की गफलत होने पर मार्ग से भटक जाने की आशंका रहती है। तब बने-बनाए काम भी बिगड़ सकते हैं और हम लक्ष्य से विचलित भी हो सकते हैं। इसमें मुश्किल यही है कि यह आत्मान्वेषण कोई स्थायी स्थिति या उपलब्धि नहीं होती कि एक बार कर लेने के बाद सदैव का निराकरण हो जाए या फिर पुनर्विचार की जरूरत ही न पड़े। इसके लिए व्यक्ति और समाज दोनों के लिए ही स्वयं को निरंतर जांचते-परखते रहने की जरूरत होती है, क्योंकि परिवेश स्वभाव से ही अस्थिर और परिवर्तनशील होता है। इस संदर्भ में देश में स्वदेशी की समकालीन गूंज विशेष महत्व रखती है। इतिहास साक्षी है कि आत्मालोचना की ओर से मुंह मोड़ना आत्मघाती हो जाता है। हमने देखा है कि परतंत्र भारत के राजनीतिक जीवन में बहुत समय तक अपने आत्मबोध को लेकर ऐसी कई नकारात्मक प्रवृत्तियां हावी रहीं कि भारत भूमि विदेशी आक्रांताओं के अधीन हो गई और कई



शताब्दियों तक उसे उनके ही अधीन रहना पड़ा। विदेशी शासकों का आकर्षण स्पष्ट रूप से भारत की समृद्धि के प्रति लोलुप दृष्टि के चलते था। उनका उद्देश्य भारत का कल्याण करना नहीं था। उनकी मुख्य रुचि अपने लिए यहां पर उपलब्ध सभी संसाधनों का यथाशक्ति दोहन करने में ही थी। उन्होंने शोषण और दमन के लिए कई अमानवीय तरकीबें भी अपनाईं और भारतीय समाज को तरह-तरह पीड़ित करते रहे।

उनके शोषण और दमन के कुचक्र ने देश के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय हितों को बड़ी ठेस पहुंचाई। भौतिक, सामाजिक और मानसिक रूप से त्रस्त करते हुए उन्होंने देश को कमजोर किया ताकि उनका अपना उद्देश्य पूरा होता रहे। अंग्रेजों के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में कई धाराएं थीं, पर उन सबके मूल में आत्मबोध की ही निर्भरी थी। अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं ने भारतीय समाज के आत्मबोध को आहत किया था। उसी आत्मबोध को लौटाने और पुनर्स्थापित करने के लिए महात्मा गांधी ने स्वदेशी का बिगुल बजाया। उन्होंने अनुभव किया कि आजादी का अर्थ स्वराज (सेल्फ रूल) है यानी अपने ऊपर अपना राज। यह सिर्फ अपने देश में अपना राज तक ही सीमित नहीं है। इसकी शर्त आत्मबोध और आत्मनियंत्रण है। सहज अर्थ में यह अपने मूल की ओर लौटने का भी आह्वान है। गांधीजी देश की स्वतंत्रता को राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन से परे जाकर वैचारिक और मानसिक स्वाधीनता के अर्थ में ग्रहण करते थे। इसी के लिए वे रचनात्मक कार्यक्रम पर जोर देते थे। अपनी भाषा, अपने उत्पाद, अपने उपकरण, अपनी शिक्षा और अपनी व्यवस्था को स्थानीयता से भी जोड़कर देखते थे। अस्पृश्यता-निवारण, श्रम पर जोर और मशीनों के सीमित उपयोग के पीछे उनकी यही मंशा थी कि समाज के सभी वर्ग आगे बढ़ सकें। इसी के लिए उनका विकेंद्रीकरण, समावेशन और संवाद पर खास जोर था। ये सभी समाज के अंतिम जन को साथ लेकर चलने के लिए रास्ता बनाते थे। खादी और चरखा स्वावलंबन के साथ-साथ रोजगार और प्रकृति के साथ सहजीवन को भी संभव करते थे। उपभोग की सीमा को पहचानते हुए और भारत की बड़ी जनसंख्या की मुश्किलों के मद्देनजर वह उपभोग को नियंत्रण में रखने और जरूरतों को कम करने पर बल देते थे। हालांकि, स्वतंत्रता पाने के बाद हमारा रुख बदलता गया। पश्चिम की छत्र-छाया हर तरफ बनी रही। उसे ही श्रेष्ठ मानकर उस पर निर्भरता बढ़ती रही। आज के वैश्विक माहौल में ऐसा दुराग्रह घातक होता है और उसके दुष्परिणाम भी दूरगामी प्रभाव वाले होते हैं। स्वदेशी का अभिप्राय अपने देश यानी मातृभूमि के प्रति हर तरह से अपनत्व की भावना है। इस दृष्टि को अपनाते हुए व्यक्ति देश रूपी समष्टि को अपने जीवन और आचरण में स्थान देता है। भारत के स्वातंत्र्य की संघर्ष गाथा में स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना और विदेशी के बहिष्कार की केंद्रीय भूमिका रही है। वह मात्र प्रतीकात्मक न होकर निजी व्यवहार में उतारने का प्रयास था। हमें गांधीजी से प्रेरणा लेते हुए देश की युवा क्षमताओं को प्रोत्साहित करने और देश की सामर्थ्य बढ़ाने के लिए स्वदेशी की ओर बढ़ना होगा। इसी से हम आत्मनिर्भर बनेंगे।

## संघ की गौरवशाली यात्रा, डाक टिकट और स्मारक सिक्का जारी

**विश्व** के सबसे बड़े गैर सरकारी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री की ओर से एक डाक टिकट और सिक्के को स्मारक के तौर पर जारी किया जाना इस संगठन की महत्ता को रेखांकित करता है। उसके जैसे व्यापक प्रभाव वाले संगठन को यह महत्ता मिलनी ही चाहिए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री की ओर से जो सिक्का जारी किया गया, उसके एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक अंकित है और दूसरी ओर भारत माता का चित्र। इसका अर्थ यही है कि आरएसएस भारत मां के प्रति समर्पित है। वास्तव में इस समर्पण भाव के कारण ही समय के साथ संघ का प्रभाव बढ़ा है। उसकी उपस्थिति देश के हर हिस्से में है और वह बढ़ती ही जा रही है। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि संघ के स्वयंसेवक निस्वार्थ सेवा भाव के परिचायक हैं। उनका एक ही ध्येय होता है भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप देश को समरस और समर्थ बनाना। वे जिस त्याग एवं समर्पण भाव से समाज और राष्ट्र सेवा के अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं, उसकी मिसाल मिलना कठिन है। इस मिसाल के जरिये वे यही संदेश देते हैं कि राष्ट्रनिर्माण के लक्ष्य में लोगों को भी जुटना होता है। यह वह मंत्र है, जिसे सभी को आत्मसात करना चाहिए, क्योंकि किसी भी राष्ट्र का उत्थान वहां के लोगों के सहयोग से ही होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके अनेक सहयोगी संगठन जिस सेवा भाव से अपना कार्य करते हैं, वही उन्हें औरों से अलग करता है। अपनी स्थापना से लेकर अब तक संघ को समय-समय पर संकीर्ण उद्देश्यों से लांछित किया गया, उसके स्वयंसेवकों को प्रताड़ित किया और उनके खिलाफ षड्यंत्र भी रचे गए, लेकिन संघ अपनी विचारधारा और अपने उन मूल्यों के प्रति अडिग रहा, जिनके लिए उसकी स्थापना की गई थी। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी रीति-नीति से असहमत अनेक लोग उसकी सराहना करने को विवश हुए। विडंबना यह है कि इसके बाद भी उसके प्रति मिथ्या आरोपों का एक सिलसिला चलता रहता है। यह तब है, जब संघ अपने आलोचकों को मान देता है और यहां तक कि उन्हें अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करता है तथा उनके प्रश्नों के उत्तर देता है। ऐसा वही संगठन कर सकता है, जो अपने उद्देश्यों को लेकर स्पष्ट हो और जो उनकी प्राप्ति को लेकर नीर-क्षीर ढंग से काम करता हो। आखिर विश्व में कितने ऐसे संगठन हैं, जो अपने विरोधियों से भी संवाद के पक्षधर हैं? संघ को कई बार इसलिए निशाने पर लिया जाता है कि वह राजनीति को प्रभावित करने का काम कर रहा है। आखिर जिस संगठन का समाज पर गहरा प्रभाव हो, वह किसी न किसी स्तर पर राजनीति पर तो असर छोड़ेगा ही। इस पर आश्चर्य और आपत्ति क्यों? ऐसा होना तो स्वाभाविक है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने करना ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साय पॅफलफला एमा. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2019/08862)

# पंडित छन्नूलाल मिश्र का निधन, संगीत जगत शोक में डूबा; पीएम मोदी ने जताई संवेदना

**मिर्जापुर ।** जाने माने शास्त्रीय गायक और पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र का निधन हो गया है। उनका निधन आज सुबह 5 बजे मिर्जापुर आवास में हुआ। पंडित छन्नूलाल मिश्र (89) को बीते शनिवार को दिल का दौरा पड़ गया था। परिवार के सदस्यों ने उन्हे मिर्जापुर के ओझला स्थित रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम हॉस्पिटल में भर्ती करवाया था। छन्नू लाल मिश्र लंबे समय से बीमार चल रहे थे। उनकी पीठ में बेड सोर होने के साथ ही शरीर में खून की कमी हो गई थी। उनकी पुत्री और केन्वी कॉलेज की प्रो. नम्रता मिश्रा ने बताया था कि बाबूजी को दिल का दौरा पड़ने के बाद डॉक्टरों ने जांच की। यहां दो यूनिट खत चढ़ाया गया। आज सुबह उनकी बेटी नम्रता ने बताया कि पिता का निधन हो गया है। नम्रता मिश्रा ने कहा, आज सुबह सवा 4 बजे हमारे निवास स्थान गंगा दर्शन कॉलोनी, मिर्जापुर में उन्होंने अंतिम सांसें ली है और वह बीमार काफी समय से चल रहे थे। उनका अंतिम संस्कार शाम को मणिकर्णिका घाट पर होगा। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा, सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। वे जीवनपर्यंत भारतीय कला और संस्कृति की समृद्धि के लिए समर्पित रहे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत को जन-जन तक पहुंचाने के साथ ही भारतीय परंपरा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने में भी अपना अमूल्य योगदान दिया। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे सदैव उनका स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। साल 2014 में वे वाराणसी सीट से मेरे प्रस्तावक भी रहे थे। शोक की इस घड़ी में मैं उनके परिजनों और प्रशंसकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। ओम शांति! पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र का गुरुवार को सुबह 4:15 पर उनकी पुत्री नम्रता मिश्रा के गंगादर्शन कॉलोनी स्थित निवास पर निधन हो गया। पंडित छन्नुलाल मिश्रा का जन्म 3 अगस्त 1936 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के हरिहरपुर गाँव में हुआ था।

# जिहाद के लिए उकसाता था रजा, बना रहा था मुजाहिदीन आर्मी, यूट्यूब से सीखा सोशल मीडिया का इस्तेमाल

**फतेहपुर** केरल से पकड़ गया हिंदू धर्मगुरुओं की हत्या की साजिश रचने वाला मोहम्मद रजा बेहद शातिर निकला। राधानगर थाना क्षेत्र के अंदौली गांव निवासी मोहम्मद रजा, युवाओं तक अपनी बात पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया का जमकर इस्तेमाल करता था। इंस्टाग्राम पर शरीयत के कानून और जिहाद की बात करने वाले उसके वीडियो का गांव के युवा इंतजार करते थे। वह खुद को मौलाना की तरह पेश कर युवाओं को भड़काऊ भाषण देता था, जिसे वह मोटिवेशनल स्पीच (उकसाने वाली जुबान) कहता था। गांव के एक युवक ने बताया कि मोहम्मद रजा व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर युवाओं को जोड़ता और कट्टरपंथी विचार फैलाता था। उसके भाषणों में कौमी एकता की आड़ में कट्टरता भरी होती थी। सोशल मीडिया के जरिये वह अपनी कथित मुजाहिदीन आर्मी तैयार कर रहा था। राधानगर थाना क्षेत्र के अंदौली गांव में मोहम्मद रजा की गिरफ्तारी के बाद

माहौल गर्म है। गांव में चर्चा है कि वह लंबे समय से युवाओं को गुमराह कर कट्टरपंथ की ओर धकेल रहा था। परिवार के करीबी लोगों का कहना है कि मोहम्मद रजा चाहे कहीं भी रहे, हर साल ईद और जलसे में शामिल होने आता था। यहां वह खुद को कट्टरपंथी बताता था। हालांकि उसकी गिरफ्तारी के बाद से अंदौली गांव में बुधवार को सन्नाटा पसरा रहा। मोहम्मद रजा के घर के गेट पर उसकी मां जमीला बानो, बहन व रिश्ते की चाची बैठी दिखीं। गांव के कुछ भी लोग दरवाजे पर एकत्र नजर आए। बहन ने बताया कि मार्च के अंतिम रमजान में रजा घर आया था। ईद के बाद केरल काम पर लौट गया। उसने तीन साल पहले दोनों छोटे भाइयों को भी काम पर बुला लिया था, लेकिन उन्हें अपने से अलग ही रखता था। मां और बहन ने रजा पर लगे आरोपों को बेबुनियाद बताया। मोहम्मद रजा के अचानक मुंबई छोड़कर केरल जाने की कड़ी का खुलासा नहीं हो पा रहा है। गांव से करीब सात से आठ साल पहले मोहम्मद रजा मुंबई गया था। मुंबई में रहने के करीब एक साल बाद ही वह केरल पहुंच गया। वह केरल किस माध्यम से पहुंचा, यह बड़ा सवाल है। इस बारे में भी एटीएस जांच कर रही है। मोहम्मद रजा के पिता की कई साल पहले मौत हो गई थी। इसके बाद परिवार के आर्थिक हालात बेहद खराब हो गए थे। स्थानीय लोग बताते हैं कि मां जमीला लोगों के घरों में काम कर अपना और बच्चों का पालन पोषण करती थी।

# मसीही किताबें पढ़ो तो खत्म होंगी सारी समस्याएं..., महिलाओं को समझाती थीं दोनों

**गोरखपुर** गोरखपुर के सहजनवां थाना क्षेत्र में धर्मांतरण कराने की कोशिश के आरोप में पुलिस ने दो महिलाओं को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी महिलाएं गरीब बस्तियों में जाकर मसीही प्रार्थना कराती थीं। साथ ही लोगों को उस धर्म की पुस्तकें पढ़ने के लिए भी प्रेरित करती थीं। कहती थीं कि मसीही पुस्तकें पढ़ने से सारी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान क्षेत्र की लक्ष्मी यादव और रोशनी के रूप में हुई। पुलिस ने उन्हें जेल भिजवा दिया है। बताया जा रहा है कि लक्ष्मी घर पर ब्यूटी पार्लर के साथ सिलाई सिखाने का भी काम करती थी। वह दावा करती थी कि जो वह बोलती जाए, वही काम सारे लोग करें तो सारे कष्ट खत्म हो जाएंगे। उसके घर पर ज्यादातर गांव की गरीब महिलाएं आती थीं। उन्हें नौकरी और पैसे का भी लालच दिया जाता था। लक्ष्मी की आठ साल की बेटी भी है। घर में पति वीरेंद्र यादव भी रहते हैं। लक्ष्मी की आदतों की वजह वह उससे मतलब नहीं रखते हैं। पुलिस की पूछताछ में लक्ष्मी ने बताया कि उसे पांच साल पहले पथरी की शिकायत हो गई थी। काफी दर्द से परेशान रहती थी। बहुत इलाज कराया लेकिन ठीक नहीं हुआ। तब किसी के बताने पर बहराइच इलाज कराने गई। वहां एक किताब दी गई। बोला गया- इसे पढ़ो, रोज प्रार्थना करो, सब ठीक हो जाएगा। उस किताब और धर्म के बारे में इंटरनेट पर सर्च कर और जानकारी हासिल की। इसके बाद प्रार्थना करने पर फायदा होने लगा। इसके बाद मैं रोज ऐसा करने लगी। गांव वालों से भी प्रार्थना कराने लगी। इसके लिए हर रविवार को स्पेशल प्रार्थना का आयोजन करती थी। गरीब बस्तियों में जाकर लक्ष्मी लोगों को धर्म विशेष की किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करती थी।

उन्हें कहती थी-इसे पढ़ने से सारी बीमारियां खत्म हो जाएंगी। तुमने जितना भी कष्ट अपनी जिंदगी में झेला है, एक ही झटके में खत्म हो जाएगा। एक नए जीवन का अहसास करोगे। ऊपर वाले ने एक ही जीवन दिया है। इसलिए अपनी झोली में कष्ट नहीं, सुख डालो। यह सब तुम तब कर पाओगे, जब सच्चे ईश्वर को समझ पाओगे। बताया जा रहा है कि इस काम में और भी कई लोग शामिल हैं। दरअसल, गांव के लोगों ने परेशान होकर धर्मांतरण की शिकायत संतकबीरनगर के विश्व हिंदू परिषद के जिला उपाध्यक्ष सौरभ जायसवाल से की। सौरभ ने रविवार को सहजनवां थाने में केस दर्ज कराया। लक्ष्मी और पांच अज्ञात को नामजद किया।

फिर पुलिस ने सोमवार को लक्ष्मी और रोशनी को गिरफ्तार किया। पुलिस ने गिरफ्तारी के दौरान तलाशी ली तो वहां से संबंधित किताबें, एक शुभ समाचार पुस्तिका, एक मसीही गीत पुस्तक और एक प्रभु की अनमोल सहायता पाकेट पुस्तिका बरामद हुई। इसके अलावा एक पुरानी डायरी और किताब भी मिली थी, जिस पर हिंदी-अंग्रेजी में कई तंत्र लिखे हुए थे। पुलिस को एक रूमाल भी मिला था, जिसे बीमार लोगों पर रखते ही बीमारियां दूर करने का दावा किया जाता था। मौके से एक मोबाइल भी मिला जिसमें धर्मांतरण से जुड़े कई वीडियो मिले हैं। एसपी नॉर्थ जितेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर दो आरोपियों को जेल भिजवा दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है। लक्ष्मी केवल गोरखपुर ही नहीं, दूसरे जिलों में भी लोगों को धर्मांतरण के लिए प्रेरित करती थी। वह पादरी भी थी और प्रार्थना सभा में लोग उसकी बातें दोहराते थे। पुलिस को उसके मोबाइल फोन से कई नंबर मिले हैं। इससे यह पता चला है कि कई और जिलों में भी लक्ष्मी का आना-जाना था। पुलिस इस बारे में जांच कर और जानकारी जुटा रही है। इस नेटवर्क से और कौन-कौन जुड़ा है, इसका भी पता लगाया जा रहा है। सितंबर 2022 में पिपराइच इलाके के महुअवा खुर्द गांव में प्रलोभन देकर धर्मांतरण के आरोप में पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया था। वह धर्म सभा आयोजित कर धर्म परिवर्तन करा रहे थे। वह गांव में खासकर अनुसूचित जाति के लोगों को रुपये, आराम की जिंदगी, मिशनरी स्कूलों में दाखिले, रोजगार जैसे लुभावने प्रलोभन देकर मनोवैज्ञानिक रूप से धर्म परिवर्तन करने का दबाव बनाते थे। जो लोग उनके बहकावे में नहीं आ रहे थे, उन्हें यह कैंसर, पेट दर्द, कान बहना, गले में दर्द जैसी बीमारी बताकर सेवा भाव का नाटक रचते थे ताकि वह धर्म परिवर्तन कर लें। धर्म परिवर्तन करने के लिए आरोपी बिना डिग्री का इलाज भी करते थे। आरोप है कि तीनों कैंसर, गर्दन दर्द, कान का बहना जैसे रोगों का इलाज करने का दावा करके झाड़-फूंक भी किया करते थे।

# एक लाख के बदले पांच लाखः सोशल मीडिया पर जाली नोट का धंधा, इंस्टाग्राम पर खुलेआम हो रही सौदेबाजी

**गोरखपुर** धंधेबाज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खुलेआम नकली नोटों का सौदा कर रहे हैं। अलग-अलग आईडी के जरिये खुलेआम नकली नोट के सौदे का ऑफर देते हैं। जैसे ही कोई संपर्क करता है धंधेबाज एक लाख असली के बदले तीन लाख के जाली नोट की शर्त बताते हुए सैंपल में वीडियो और फोटो भेज देते हैं।

अभी कुछ दिन पहले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिये ही 962168.....नंबर पर फोन कर जाली नोट की डील की चर्चा हुई थी। अमर उजाला की पड़ताल में ये तथ्य सामने आए हैं। गावंडे जगदीश नाम से इंस्टाग्राम पर संचालित की एक आईडी पर धंधेबाज जाली नोटों का सौदा करता है। रिपोर्टर ने सौदेबाज बनकर दिए नंबर (700387....) पर फोन कर संपर्क किया। धंधेबाज ने तुरंत नोटों की अदला बदली पर सहमति जता दी। दरअसल, इन दिनों सोशल मीडिया के बढ़ते इस्तेमाल ने अपराधियों के लिए भी नया रास्ता खोल दिया है। युवा सोशल मीडिया पर जीरो इन्वेस्टमेंट डबल इनकम जैसे विज्ञापनों देखकर गलत रास्ते पर जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर इस बारे में की गई पड़ताल में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। इंस्टाग्राम पर अनगिनत फर्जी अकाउंट दिखें, जो एक का सात, तीन का दस, पांच का पंद्रह और दस का सौ का ऑफर देते नजर आते हैं। ये सब नकली के बदले असली के भाव हैं। जैसे, एक का सात, मतलब एक नोट असली दो और सात नोट नकली लो। मतलब अगर आप सौ के नोटों का एक बंडल मतलब दस हजार देते हैं तो बदले में आपको सात बंडल यानी 70 हजार के नकली नोट मिलेंगे। ऐसे ही बातचीत में एक लाख असली नोटों के बदले पांच लाख रुपये नकली का ऑफर भी सामने आया। नोट पहुंचाने का पूरा रिस्क धंधेबाज खुद उठाने को तैयार है। धंधेबाज जाली नोट खपाने का तरीका भी बताते हैं। पेट्रोल पम्प पर ईंधन लेते और दुकानों से सामान लेते हुए नकली नोट खपाने का वीडियो भी शेयर करते हैं। बताते हैं कि कैसे आसानी से जाली नोट खपाए जा रहे हैं। ठेकेदार अपने मजदूर, पेट्रोल पंप, ढाबे और शराब की दुकान में इसे खपाते हैं। इसके अलावा अवैध तरीके से जमीन का सौदा करने वाले भी इस धंधे में शामिल हो रहे हैं।

# बरेली बवालः धर्मस्थल की छत से उतरकर पुलिस से भिड़े थे बवाली... ड्रोन कैमरों से बनाए वीडियो से सामने आई हकीकत

**बरेली** बरेली में शुक्रवार को मौलाना तौकीर रजा के बुलावे पर आए उपद्रवियों ने शहर में किस तरह बवाल करने की कोशिश की और पुलिस ने कैसे इस पर काबू पाया, ड्रोन कैमरों से बनाए गए वीडियो में यह साफ दिख रहा है। बुधवार को ये वीडियो पुलिस की ओर से जारी किए गए। एसएसपी अनुराग आर्य ने बताया कि बवाल वाले दिन पुलिस ने तीन सरकारी ड्रोन के साथ ही कुछ निजी ड्रोन भी खलील स्कूल व अन्य संवेदनशील स्थानों के आसपास उड़ाए थे। भीड़ ने धर्मस्थल में घुसने, वहां से निकलकर हमला करने के दौरान इन पर गौर नहीं किया। अब यही वीडियो आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस के काम आ रहे हैं। उच्च क्षमता के कैमरों से ली गई तस्वीरें व वीडियो इतने स्पष्ट हैं कि चौकी प्रभारियों को प्रमुख आरोपियों को तलाशने में कोई खास अड़चन नहीं आ रही है। यह वीडियो जारी हुए तो थोड़ी ही देर में सोशल मीडिया पर वायरल हो गए। माना जा रहा है कि मौलाना के परिवार की प्रेसवार्ता में बेकसूरों पर कार्रवाई की बात कही गई थी। इसके बाद बरेली पुलिस ने ये वीडियो जारी किए हैं। वीडियो में धर्मस्थल की छतों पर जमा लोग, छत से उतरकर नीचे भागती भीड़ और गलियों में घुसकर पथराव करते लोगों के साथ ही लाठी लेकर भीड़ को खदेड़ती पुलिस साफ तौर पर देखी जा सकती है। मौलाना तौकीर को फतेहगढ़ जेल भेजे जाने के बाद उसके किले की एक-एक ईंट दरक रही है। उसके गुर्गों की गिरफ्तारी जारी है। अब उसका दाहिना हाथ पार्टी प्रवक्ता डॉ. नफीस, नफीस के बेटे फरमान समेत नौ आरोपी जेल भेजे गए हैं। नफीस और उसके बेटे पर दंगा भड़काने की साजिश रचने का आरोप है। नफीस के इशारे पर ही मस्जिदों में नमाज का वक्त बदला गया था। एसपी सिटी दफ्तर में आयोजित प्रेसवार्ता में एसएसपी अनुराग आर्य ने बताया कि 26 सितंबर को शहर में बवाल करने के लिए मौलाना तौकीर रजा और उसकी मंडली ने षड्यंत्र रचा था। मौलाना की पार्टी के नेता डॉ. नफीस और उसके बेटे फरमान की भूमिका इस मामले में नफरत फैलाने की रही है। मौलाना के साथ रहकर नफीस लगातार माहौल भड़का रहा था। आमतौर पर दिन में नमाज का वक्त साढ़े 12 बजे से पौने चार बजे तक रहता है। उस दिन नफीस के भड़काने पर यह संदेश फैलाया गया कि सभी मस्जिदों में दोपहर एक बजे नमाज होगी। इसी संदेश से पुलिस को संदेह हो गया कि सभी लोगों को नमाज के बहाने एक साथ बुलाकर दंगा करने की साजिश है। एसएसपी ने बताया कि जिले के अलग-अलग हिस्सों के साथ ही बंगाल व बिहार तक के लोग शहर में इस्लामिया मैदान पर कूच करने को बुलाए गए थे। गिरफ्तारी व बरामदगी से यह बात साफ हो चुकी है। नफीस का बेटा फरमान आईएमसी के सोशल मीडिया अकाउंट लगातार अपडेट कर भड़काऊ बयान व इस्लामिया मैदान में भीड़ के पुराने वीडियो डालकर लोगों को उकसा रहा था। इसी भड़काने पर नाबालिग लड़के और ग्रामीण शहर चले आए और जाने-अनजाने बवाल का हिस्सा बन गए। एसएसपी ने बताया कि अब तक 82 उपद्रवी सलाखों के पीछे भेजे जा चुके हैं।

# सीएम योगी बोले- महिलाओं के प्रति अपराध में न्यूनतम, सजा दिलाने में नम्बर वन है यूपी

**गोरखपुर ।** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समस्त प्रदेशवासियों को शारदीय नवरात्र की पावन महानवमी एवं गुरुवार को मनाए जाने वाले विजयदशमी पर्व की हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि जीवन के किसी भी पक्ष में नारी शक्ति के बगैर सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती। नारी शक्ति के प्रति सम्मान, सुरक्षा और स्वावलंबन के लिए इसी भाव के साथ अनेक कार्यक्रम चला रही है। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप सुखद तथ्य यह है कि आबादी के दृष्टिकोण से देश का सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में महिलाओं के प्रति अपराध न्यूनतम है। जबकि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध के मामले में सजा दिलाने में यह प्रदेश देश में नम्बर वन है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बतौर गोरक्षपीठाधीश्वर बुधवार को गोरखनाथ मंदिर में शारदीय नवरात्र की महानवमी तिथि में कन्या पूजन के बाद मीडियाकर्मियों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सनातन धर्मावलंबी वर्ष में दो बार शारदीय और वासंतिक नवरात्र में जगतजननी मां भगवती दुर्गा के नौ स्वरूपों के पूजन व अनुष्ठान के कार्यक्रम से श्रद्धा और उल्लास से जुड़ते हैं। सनातन परंपरा में मातृ शक्ति

व नारी शक्ति के प्रति आस्था का यह पर्व नई प्रेरणा प्रदान करता है। नवरात्र का यह पर्व अवगत कराता है कि चराचर जगत की आदि शक्ति, नारी शक्ति का ही रूप हैं। उन्होंने कहा कि आज शारदीय नवरात्र की नवमी तिथि पर मां सिद्धिदात्री के स्वरूप के पूजन के साथ कन्या पूजन का अनुष्ठान हो रहा है।

वह सौभाग्यशाली है कि गोरक्षपीठ की पवित्र परंपरा के अनुसार उन्हें भी कन्या पूजन का अनुष्ठान करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुमुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा सनातन आस्था में नारी शक्ति को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सनातन आस्था की नैतिक जिम्मेदारी के भाव से सरकार नारी शक्ति की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के लिए समर्पित है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए शारदीय नवरात्र की पहली तिथि, 22 सितंबर से मिशन शक्ति के पांचवें चरण का शुभारंभ किया गया है। इसमें महिलाओं की सुरक्षा के साथ ही उनके स्वावलंबन जागरूकता के लिए पंचायत स्तर तक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके तहत प्रदेश के सभी जिलों में सराहनीय कार्य हो रहे हैं। मिशन शक्ति सफलता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत ने सदैव नारी शक्ति के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखा है। हरेक कालखंड में इसके दर्शन होते हैं।

आज भी प्रत्येक क्षेत्र में भारत की नारी शक्ति ने अपनी ताकत और सामर्थ्य का एहसास कराकर दुनिया को अचंभित किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जहां बेटी सुरक्षित और सम्मानित है तो वहां का समाज भी सुरक्षित और सम्मानित माना जाता है। उत्तर प्रदेश में ऐसा ही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मातृ वंदना, कन्या सुमंगला और सामूहिक विवाह जैसी योजनाएं बेटियों की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के लिए हैं।

# बारिश भी न तोड़ सकी हौसला: लाखों का नुकसान, पर कारीगरों ने न मानी हार

नई दिल्ली । बीते तीन दिन से घर नहीं गया था, सोचा था कि मंगलवार को आराम से काम खत्म करने के बाद परिवार के साथ समय बीताऊंगा। लेकिन इंद्रदेव को कुछ और ही मंजूर था। कर्ज लेकर पुतलों को बनाने का काम शुरू किया। अब बारिश ने इतना नुकसान कर दिया है कि समझ नहीं आ रहा, कैसे परिवार का पेट पालूंगा। यह कहते हुए रावण का पुतला बना रहे कारीगर कृष्ण भावुक हो गए। कृष्ण ने कहा, पूरी लगन से रावण के पुतलों को अंतिम रूप देने में लगा हूं। बच्चों से भी बात नहीं की है। सोचा, अगर इस बार ना बना सका, तो कई लोगों का दशहरा अधूरा रह जाएगा...। राजधानी के तितारपुर, नांगलोई, रजौरी गार्डन, रमेश नगर, ओखला, कालकाजी, शाहदरा, सीलमपुर और दिलशाद गार्डन समेत अन्य इलाकों में रावण दहन के लिए रावण की खरीददारी देखते ही बन रही थी। लेकिन बारिश ने उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया। लेकिन रावण के विशाल पुतलों को अंतिम रूप देने के लिए कारीगर फिर से लगे हैं। उन्होंने न ठंडे खाई, न नींद ली, बस दिन रात काम में लगे हैं। तितारपुर में 45 वर्षीय कारीगर राजो और उनकी टीम ने बताया कि कई दिनों से अपनी पूरी ताकत झोंक दी। बीते मंगलवार को हुई बारिश में 50 में से 45 पुतले पुतले नष्ट हो गए थे। ऐसे में लाखों का नुकसान हुआ, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। ऐसे में उन्होंने ठाना कि हर बार की तरह इस बार भी पुतले समय पर तैयार होंगे। चाहे कुछ भी करना पड़े। कारीगर ओमपाल ने बताया कि वो खुद 15 घंटे से भूखे हैं। इसका कारण लाखों का नुकसान और समय की कमी है। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी, दिन-रात एक कर दिया, ताकि रावण खड़ा हो सके। उन्होंने बताया कि सोचा था इस बार अच्छा व्यापार होगा, लेकिन मौसम और ऑर्डर की कमी ने सब चौपट कर दिया। वहीं, कारीगर दिलीप ने बताया कि कर्ज लेकर काम शुरू किया था। उम्मीद थी कि त्योहार तक घाटा भर जाएगा। लेकिन, बारिश ने मेहनत को गलियों में बहा दिया। इस बार रावण के पुतलों पर ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित नारे लिखे हुए हैं। कारीगर महेंद्र पाल राय ने बताया रावण की विशाल मूंछों पर ऑपरेशन सिंदूर कामयाब, भारतीय सेना को सलाम जैसे कई तरह के कोटेशन लिखे हैं। जलने से पहले रावण ठहाके लगाएगा और उसके आंखों से आग बरसेगी। राजधानी की रामलीलाओं में इस बार दर्शकों को कुछ नया और बेहद आकर्षक देखने को मिलेगा। विजयदशमी पर रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतलों को जलाने के लिए इस बार लाईटिक तकनीक का इस्तेमाल किया गया है।

# आठ साल में जनवरी से सितंबर की हवा रही सबसे साफ, अर्ली वार्निंग सिस्टम ने भी किया सही काम

दिल्ली दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता में लगातार सुधार देखा जा रहा है। इस साल जनवरी से सितंबर तक दिल्ली ने पिछले आठ वर्ष कोविड लॉकडाउन वर्ष 2020 को छोड़कर 2018-2025 में अपना सर्वश्रेष्ठ औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) दर्ज किया है। यह आंकड़े वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने बुधवार को जारी किए। इस अवधि में दिल्ली का औसत सूचकांक 164 रहा, जो 2024 में 178, 2023 में 167, 2022 में 184, 2021 में 180, 2019 में 188 और 2018 में 193 था। इसके अलावा, मानसून अवधि (जुलाई-सितंबर) के दौरान भी दिल्ली ने शानदार प्रदर्शन किया है। इस वर्ष मानसून में औसत एक्यूआई 91 रहा, जो 2018 से 2025 तक (2020 को छोड़कर) की समान अवधि में सबसे बेहतर है। तुलनात्मक रूप से 2024 में 91, 2023 में 103, 2022 में 95, 2021 में 99, 2019 में 106 और 2018 में 109 एक्यूआई दर्ज किया गया था। अनुकूल मौसमी परिस्थितियों और हितधारकों के समन्वित प्रयासों ने इस सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2025 में जनवरी से सितंबर तक एक भी दिन ऐसा नहीं रहा जब एक्यूआई 400 यानि गंभीर या गंभीर से अधिक दर्ज किया गया हो। यह उपलब्धि अपने आप में उल्लेखनीय और राहत भरी है, क्योंकि 2024 और 2023 में 3-3 दिन, 2022 में एक दिन, 2021 में छह दिन, 2019 में सात दिन और 2018 में छह दिन ऐसे थे। इसके अलावा, इस अवधि में 75 संतोषजनक दिन दर्ज किए गए, जो 2020 को छोड़कर पिछले वर्षों की तुलना में सबसे अधिक है। तुलना के लिए, 2024 में 66, 2023 में 59, 2022 में 61, 2021 में 69, 2019 में 54 और 2018 में 53 संतोषजनक



दिन थे। यही नहीं, दिल्ली में इस वर्ष जनवरी से 28 सितंबर तक की अवधि में पीएम 2.5 का औसत स्तर 69 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा, जो 2018 के बाद से सबसे कम है (2020 को छोड़कर)। तुलनात्मक रूप से, 2024 में 81, 2023 में 73, 2022 में 80, 2021 में 83, 2019 में 85 और 2018 में 89 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर था। इसी तरह, पीएम 10 का औसत स्तर 161 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा, जो 2024 में 181, 2023 में 169, 2022 में 190, 2021 में 183, 2019 में 194 और 2018 में 208 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की तुलना में काफी कम है। राजधानी में सर्दियों के दौरान बढ़ते वायु प्रदूषण को रोकने के लिए विकसित एयर क्वालिटी अर्ली वॉर्निंग सिस्टम (एक्यूईडब्ल्यूएस) ने अच्छा प्रदर्शन किया है। काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वॉटर (सीईईडब्ल्यू) के एक ताजा अध्ययन से पता चला है कि यह सिस्टम 2023-24 और 2024-25 की सर्दी (अक्तूबर से फरवरी) में बहुत खराब और उच्च स्तर के प्रदूषण दौर की भविष्यवाणी 80 फीसदी से अधिक सटीकता के साथ कर सका। अध्ययन में कहा गया है कि 2023-24 में 92 ऐसे प्रदूषण एपिसोड्स में से 83 और 2024-25 में 58 में से 54 का पूर्वानुमान सही रहा। यह सिस्टम एक्यूआई (एयर क्वालिटी इंडेक्स) 300 से ऊपर के स्तर को पहले ही बता देता है, जिससे प्रशासन प्रतिबंध लगाने और स्वास्थ्य सुरक्षा के उपाय समय पर कर सके। सीईईडब्ल्यू की रिपोर्ट हाउ वेल कैन दिल्ली प्रिडिक्ट एयर क्वालिटी? इनसाइट्स फ्रॉम इंडियाज डिसीजन सपोर्ट सिस्टम में यह भी उल्लेख है कि गंभीर दिनों (एक्यूआई 400 से अधिक) की भविष्यवाणी में 2024-25 में सुधार हुआ। 2023-24 में 15 में से सिर्फ एक दिन सही पकड़ा गया, जबकि अगले साल 14 में से 5 दिनों का पूर्वानुमान सटीक रहा, यानी लगभग पांच गुना बेहतर। वहीं, सीईईडब्ल्यू के प्रोग्राम लीड डॉ. मोहम्मद रफीउद्दीन ने कहा कि नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत देश ने मॉनिटरिंग और वॉर्निंग सिस्टम में प्रगति की है। दिल्ली का एक्यूईडब्ल्यूएस उच्च सटीकता दिखा रहा है लेकिन अपडेटेड एमिशन इन्वेंट्री से इसे और मजबूत किया जा सकता है। इससे प्रदूषण के स्रोतों की बेहतर समझ मिलेगी। देश को विज्ञान, फंडिंग और पारदर्शिता के साथ इन सिस्टम्स को बढ़ाना चाहिए, ताकि मिटिगेशन प्लान 2025 मजबूत-आधारित हो। सीईईडब्ल्यू ने राष्ट्रीय एमिशन इन्वेंट्री को हर 2-3 साल अपडेट करने, डेटा को पब्लिक करने और हाई-रिजोल्यूशन मॉडलिंग में निवेश की सलाह दी।

## जीटीबी अस्पताल से फरार सहायक प्रोफेसर रेवाड़ी से गिरफ्तार, वायवा के बहाने एमबीबीएस छात्रा से की थी छेड़छाड़

नई दिल्ली शाहदरा जिला के गुरु तेग बहादुर अस्पताल (जीटीबी) में एमबीबीएस की छात्रा के साथ छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। आरोप है कि यूसीएमएस (मेडिकल कॉलेज) कॉलेज में एनेस्थीसिया विभाग तैनात सहायक प्रोफेसर डॉ. मो. शाकिर नईम ने वायवा के बहाने सूनसान जगह ले जाकर छात्रा के साथ शारीरिक छेड़छाड़ की। विरोध करने पर छात्रा को धमकाया गया। पीड़िता ने फौरन इसकी शिकायत अपनी क्लासमेट को दी। बाद में जीटीबी एंक्लेव थाने में मामले की शिकायत कर दी गई। पुलिस ने छात्रा का बयान लेकर 26 सितंबर को इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया। एफआईआर दर्ज होने की जानकारी मिलते ही सहायक प्रोफेसर फरार हो गए। पुलिस ने टेक्निकल सर्विलांस की मदद से पड़ताल करने के बाद आरोपी शाकिर नईम को हरियाणा के रेवाड़ी से गिरफ्तार कर लिया। बाद में उनको कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया है। जीटीबी एंक्लेव थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से मामले की जांच की जा रही है। शाहदरा जिला के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि पीड़ित छात्रा यूसीएमएस कॉलेज से एमबीबीएस कर रही है। इसी कॉलेज में मो. शाकिर नईम असिस्टेंट प्रोफेसर है। इनकी तैनात एनेस्थीसिया विभाग में है। आरोप है कि 26 सितंबर को क्लास लेने के बाद आरोपी ने पीड़िता को वायवा कराने के बहाने शारीरिक छेड़छाड़ की। छात्रा ने इसका विरोध किया तो आरोपी धमकाने लगा। बाद में वारदात की जानकारी स्टाफ को छात्रों को हो गई। इसके बाद पुलिस को खबर दी गई। घटना के बाद से छात्राएं बुरी तरह डरी हुई हैं। पुलिस ने पीड़ित छात्रा की काउंसलिंग भी करा दी है। अब मामले की जांच की जा रही है। पता किया जा रहा है कि आरोपी ने और किसी के साथ तो छेड़छाड़ नहीं की।

## विजयदशमी पर पाक को रक्षा मंत्री की चेतावनी कराची का रास्ता सर क्रीक से होकर गुजरता है...



कच्छ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विजयदशमी के अवसर पर गुजरात के कच्छ में शस्त्र पूजन कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इसके बाद भारतीय सैनिकों को संबोधित किया। इस दौरान राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि, अगर पाकिस्तान की ओर से सरक्रीक क्षेत्र में कोई दुस्साहस किया गया, तो उसे ऐसा निर्णायक जवाब मिलेगा कि इतिहास और भूगोल दोनों बदल जाएंगे।
उन्होंने कहा, भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के सभी उद्देश्यों को सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है, लेकिन सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ उसकी लड़ाई जारी रहेगी। दशहरा के अवसर पर शस्त्र पूजा से पहले गुजरात के भुज स्थित एक सैन्य अड्डे पर सैनिकों के एक समूह को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, शस्त्रों के प्रति समर्पण आसुरी शक्तियों पर दैवी शक्ति की विजय की महानता को दर्शाता है। इसलिए, जब हम शस्त्रों की पूजा करते हैं, तो हम इस शक्ति का उपयोग केवल धर्म और न्याय की रक्षा के लिए करने का संकल्प भी लेते हैं। भगवान राम ने अपने जीवन में इसी संकल्प का परिचय दिया। जब उन्होंने रावण के विरुद्ध युद्ध किया, तो उनके लिए वह युद्ध केवल विजय का साधन नहीं, बल्कि धर्म की स्थापना का साधन था।
यहां तक कि जब महाभारत का युद्ध भगवान कृष्ण के मार्गदर्शन में लड़ा गया, तो उसका उद्देश्य पांडवों की विजय सुनिश्चित करना नहीं, बल्कि धर्म की स्थापना करना था। शस्त्रों की पूजा इस बात का प्रतीक है कि भारत न केवल शस्त्रों की पूजा करता है, बल्कि समय आने पर उनका प्रयोग करना भी जानता है। राजनाथ सिंह ने सीमा विवाद को लेकर भी पाकिस्तान पर निशाना साधा।
राजनाथ सिंह ने कहा, आजादी के 78 साल बाद भी सर क्रीक क्षेत्र में सीमा विवाद को हवा दी जा रही है। भारत ने इसे बातचीत के जरिए सुलझाने के कई प्रयास किए हैं, लेकिन पाकिस्तान की नीयत में खोट है, उसकी नियत साफ नहीं है। जिस तरह से पाकिस्तानी सेना ने हाल ही में सर क्रीक से सटे इलाकों में अपने सैन्य ढांचे का विस्तार किया है, उससे पाकिस्तान के गलत इरादों का पता चलता है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना और बीएसएफ संयुक्त रूप से और सतर्कतापूर्वक भारत की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। यदि पाकिस्तान की ओर से सर क्रीक क्षेत्र में कोई दुस्साहस करने की कोशिश की गई, तो उसका इतना निर्णायक जवाब दिया जाएगा कि इतिहास और भूगोल दोनों बदल जाएंगे। 1965 के युद्ध में भारतीय सेना ने लाहौर तक पहुंचने की क्षमता का प्रदर्शन किया था। आज 2025 में पाकिस्तान को याद रखना चाहिए कि कराची जाने का एक रास्ता सर क्रीक से होकर गुजरता है। राजनाथ सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान ने भारत की रक्षा प्रणाली में सेंध लगाने का असफल प्रयास किया, लेकिन भारतीय सेना ने पाकिस्तानी वायु रक्षा तंत्र की पोल खोल कर दुनिया को यह संदेश दिया कि वह दुश्मन को भारी नुकसान पहुंचा सकती है।

## आई लव मोहम्मद विवाद: बरेली जाने की घोषणा पर सांसद चंद्रशेखर आजाद नजरबंद



सहारनपुर सहारनपुर जनपद में आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और नगीना सांसद चंद्रशेखर आजाद को पुलिस ने गुरुवार सुबह उनके छुटमलपुर स्थित आवास पर डिटेन कर लिया। दरअसल, सांसद ने बुधवार देर रात सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया था कि वह बरेली जाकर वहां की घटनाओं का जायजा लेंगे और पीड़ित परिवारों से मुलाकात करेंगे। उनके इस एलान के बाद से ही प्रशासन अलर्ट हो गया था। बुधवार रात करीब 12 बजे चंद्रशेखर पुरकाजी से अपने छुटमलपुर स्थित आवास पहुंचे थे। इसके तुरंत बाद पुलिस बल मौके पर पहुंच गया और उनके आवास पर तैनात हो गया। सुबह होते-होते जिले के सात थानों की पुलिस छुटमलपुर पहुंच गई और हरिजन कॉलोनी स्थित उनके आवास जाने वाले सभी रास्तों पर बैरिकेडिंग लगाकर निगरानी शुरू कर दी गई। सीओ मुनीष चंद और सीओ एलआईयू खुद घटनास्थल पर मौजूद रहे और पूरे हालात पर नजर रखे रहे। भारी पुलिस तैनाती के बीच सांसद अपने आवास के भीतर ही रहे और दिनभर किसी से मुलाकात नहीं की। पुलिस सूत्रों के अनुसार, प्रशासन की कोशिश है कि सांसद चंद्रशेखर किसी भी तरह से बरेली न पहुंच पाएं और वहां तनाव की स्थिति न बने। यही कारण है कि एहतियातन उन्हें उनके घर पर ही नजरबंद कर दिया गया है।

## लेह में बाज़ार खुले, लद्दाख की हर उम्मीद पूरी करेगी केंद्र सरकार- एलजी

नई दिल्ली लद्दाख के लेह शहर के निवासी गुरुवार को कर्फ्यू में ढील का आनंद ले रहे हैं। प्रशासन द्वारा दी गई ढील के तहत दुकानें खुलने के बाद सड़कों पर वाहनों और पैदल यात्रियों की भीड़ उमड़ पड़ी। आज सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक बाजार खुलेंगे, जिससे उन लोगों को राहत मिलेगी जो आखिरकार अपने घरों से बाहर निकल पा रहे हैं। एक स्थानीय निवासी ने बताया, बाजार एक हफ्ते से बंद थे। यह विरोध प्रदर्शन लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर लोगों द्वारा किया जा रहा था, जो लेह में पुलिस अधिकारियों के साथ झड़पों में बदल गया। इससे पहले, लद्दाख के उपराज्यपाल (एलजी) कविंदर गुप्ता ने जोर देकर कहा कि केंद्र सरकार लद्दाख की सभी उम्मीदों को पूरा करने के लिए काम कर रही है और उम्मीद जताई कि मामला जल्द ही सुलझ जाएगा। गुप्ता ने एएनआई को बताया वे (लद्दाख के नेता जो विरोध प्रदर्शन का हिस्सा थे) प्रशासन के साथ बातचीत कर रहे हैं, और वर्तमान घटनाक्रम को देखते हुए, हम बातचीत की मेज पर भी चर्चा कर सकते हैं। एक बार ऐसा



माहौल बन जाए, तो हम बातचीत शुरू करेंगे। प्रशासन ने लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश की है... मैं पिछले दो महीनों से यहां हूं, और मैंने किसी भी बैठक को अस्वीकार नहीं किया है। लोग मेरी बात सुनते हैं और समाधान की दिशा में काम करते हैं। एलजी गुप्ता ने कहा कि प्रशासन रोजगार सृजन के लिए कदम उठा रहा है और अन्य क्षेत्रों के लोगों को शामिल करने के प्रयास भी जारी हैं। एलजी गुप्ता ने कहा कि यहां रोजगार सृजन के प्रयास जारी हैं। हमने लगभग 1,000 पदों के लिए विज्ञापन दिया है। इसके अतिरिक्त, हम पर्यटन, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों में लोगों को शामिल करने के लिए काम कर रहे हैं। यहां 18,000 एमएसएमई इकाइयां हैं, जिनमें 50,000 से ज्यादा लोग कार्यरत हैं। इस बीच, एलजी गुप्ता ने बुधवार को केंद्र शासित प्रदेश में मौजूदा कानून-व्यवस्था की स्थिति का जायजा लेने के लिए एक उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में मुख्य सचिव पवन कोतवाल, पुलिस महानिदेशक एसडी सिंह जामवाल, डीआईजी श्रीनगर दक्षिण फैके सिंह, लेह के उपायुक्त, लेह के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार, सीओ 79, रजत जैन, सीओ 25 और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। अधिकारियों ने उपराज्यपाल को नवीनतम सुरक्षा परिदृश्य और क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता बनाए रखने के लिए किए गए उपायों से अवगत कराया। 24 सितंबर को हुई हिंसा में पुलिस की जवाबी कार्रवाई में चार लोगों की जान चली गई थी।

## पीएम मोदी ने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे का जाना हाल, सर्जरी के बाद स्वस्थ स्वस्थ होने की की



नई दिल्ली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से फोन पर बात की और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। पीएम मोदी ने खरगे के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की। हाल ही में खड़गे को पेसमेकर इम्प्लांटेशन की सर्जरी हुई है।
पीएम मोदी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, खरगे जी से बात की। उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएं दीं। उनके अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए प्रार्थना करता हूं। उनके बेटे और कर्नाटक के आईटी मंत्री प्रियांक खरगे ने बताया कि पिता की स्थिति स्थिर है और वे तीन अक्टूबर से अपने आधिकारिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेना शुरू कर देंगे। प्रियांक ने एक्स पर लिखा, खरगे जी का पेसमेकर इम्प्लांटेशन आज सफलतापूर्वक पूरा हुआ। यह एक छोटी और सामान्य प्रक्रिया थी और वे अब स्थिर हैं। वे तीन अक्टूबर से कामकाज शुरू करेंगे और अपने सभी निर्धारित कार्यक्रमों में शामिल होंगे। हम सभी का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने चिंता, समर्थन और स्नेह दिखाया।

**सात अक्टूबर को नागालैंड जाएंगे खरगे**

इस बीच खरगे सात अक्टूबर को कोहिमा का दौरा करेंगे और नागा सॉलिडैरिटी पार्क में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। नागालैंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और लोकसभा सांसद एस ने कोहिमा स्थित कांग्रेस भवन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान यह घोषणा की।

## मोदी के भाषण पर कांग्रेस ने दी तीखी प्रतिक्रिया किस बात के लिए आरएसएस की तारीफ कर रहे पीएम

नई दिल्ली कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने गुरुवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण को लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री आरएसएस की तारीफ आखिर किस बात के लिए कर रहे हैं? केवल एक सिक्का जारी करके आप आरएसएस की तारीफ नहीं कर सकते। आरएसएस ऐसा संगठन है, जिसके हाथ महात्मा गांधी के खून से रंगे हैं और जिसे देश के पहले गृह मंत्री सरदार पटेल ने प्रतिबंधित किया था। आरएसएस के 100 साल पूरे होने के मौके पर कांग्रेस ने गुएक पुरानी किताब का हवाला देते हुए दावा किया कि महात्मा गांधी ने आरएसएस को तानाशाही सोच के साथ एक सांप्रदायिक संगठन कहा था। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह बात प्यारे लाल द्वारा लिखित गांधीजी की जीवनी में



दर्ज है। प्यारे लाल गांधीजी के सबसे करीबी सहयोगियों में से एक थे और 1942 में महादेव देसाई की मृत्यु के बाद उनके सचिव बने थे।
रमेश ने बताया कि 1956 में प्यारे लाल ने अपनी पुस्तक 'महात्मा गांधी: द लास्ट फेज' का पहला खंड नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद से प्रकाशित किया था, जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद की भूमिका और उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अनुशंसा भी शामिल थी। दूसरा खंड 1958 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने दावा किया कि दूसरे खंड के पेज नंबर 440 पर प्यारे लाल ने गांधीजी की एक बातचीत का जिक्र किया है, जो 12 सितंबर 1947 को हुई थी। उस बातचीत में गांधीजी ने आरएसएस को एक सांप्रदायिक संगठन जिसकी सोच तानाशाही है बताया था। जयराम रमेश ने बताया कि इस बातचीत के करीब पांच महीने बाद तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके साथ ही रमेश ने उस किताब का स्क्रीनशॉट भी साझा किया, जिसमें यह बात दर्ज है। बुधवार को जब प्रधानमंत्री मोदी ने आरएसएस की तारीफ करते हुए कहा कि संगठन ने हमेशा राष्ट्र प्रथमके सिद्धांत पर काम किया, तो इसके जवाब में कांग्रेस ने उन्हें महात्मा गांधी की हत्या और उस समय के हालात की याद दिलाई। रमेश ने बुधवार को एक और पोस्ट में लिखा, प्रधानमंत्री जी ने आज सुबह आरएसएस पर काफी कुछ कहा। क्या उन्हें पता है कि 18 जुलाई 1948 को सरदार पटेल ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी को क्या लिखा था?

## इस्राइल के यहूदी राष्ट्रवादी और आरएसएस जुड़वां भाई हैं, केरल सीएम ने साधा संघ पर निशाना



तिरुवनंतपुरम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना को 100 साल पूरे हो गए हैं। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी समेत विभिन्न लोगों ने संघ की तारीफ की। वहीं विपक्षी नेताओं ने संघ पर निशाना साधा। केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने संघ की निंदा करते हुए कहा कि इस्राइल के यहूदी राष्ट्रवादी और भारत में संघ जुड़वां भाई हैं। केरल सीएम ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा आरएसएस के शताब्दी वर्ष पर 100 रुपये का सिक्का और पोस्टल स्टाम्प जारी होना हमारे संविधान का अपमान है। यह एक ऐसे संगठन को वैधता देना है, जिसका हमारे देश की आजादी की लड़ाई में कोई योगदान नहीं है, जो भेदभाव की विचारधारा को बढ़ावा देता है। यह सम्मान देना हमारी आजादी की लड़ाई के नायकों पर सीधा हमला है, जिन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव और एकजुट भारत का सपना देखा था। केरल के कन्नूर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम पी. विजयन ने अमेरिकी राष्ट्रपति राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एच-1बी वीजा की फीस बढ़ाने के एलान पर पीएम मोदी की चुप्पी पर भी सवाल उठाए। सीएम ने कहा कि भारतीय प्रधानमंत्री, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हर बात मानते हैं।
ट्रंप प्रशासन ने एच-1बी वीजा की फीस बढ़ाई, लेकिन पीएम मोदी ने एक शब्द नहीं कहा। विजयन ने ट्रंप के टैरिफ पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी की आलोचना की। वहीं, संघ की स्थापना के 100 साल पूरे होने पर संघ द्वारा देशभर में विभिन्न उत्सव कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। साल 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने महाराष्ट्र के नागपुर में संघ की स्थापना की थी।

## संभल में फिर गरजा बुलडोजर: अवैध धार्मिक स्थल और बरात घर को गिराने की कार्रवाई, छावनी में तब्दील क्षेत्र

संभल संभल के असमोली थानाक्षेत्र के गांव में प्रशासन ने अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। कई एकड़ भूमि पर बने इस निर्माण में लोग मदरसा और बरात घर को चला रहे थे। एसपी केके बिश्नोई ने बताया कि यह जमीन तालाब के लिए चिन्हित है। निर्माण हटाने के लिए संबंधित पक्ष को 30 दिन का समय दिया गया था, लेकिन तय समय सीमा पूरी होने के बाद भी अवैध निर्माण नहीं हटाया गया। इसके बाद प्रशासन ने खुद कार्रवाई का फैसला लिया है। संभावित विरोध को देखते हुए इलाके में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। माहौल तनावपूर्ण न हो, इसके लिए पूरे क्षेत्र को छावनी में बदल दिया गया है। घरों से बाहर न निकलने की हिदायत दी गई है। कार्रवाई की निगरानी के लिए मौके पर डीएम और एसपी मौजूद हैं। ड्रोन से भी क्षेत्र की निगरानी की जा रही है। प्रशासन का कहना है।

## मोहन भागवत का संबोधन: पहलगाम हमले और ऑपरेशन सिंदूर का भी जिक्र

नई दिल्ली राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने संघ के 100 साल पूरा होने पर नागपुर में विजयदशमी उत्सव कार्यक्रम को संबोधित किया। इस मौके पर मोहन भागवत ने देश के लोगों से स्वदेशी की अपील की और पड़ोसी देशों में जारी उथल-पुथल का भी जिक्र किया। इसके साथ ही संघ प्रमुख ने पहलगाम हमले और ऑपरेशन सिंदूर का भी जिक्र किया। अपने संबोधन में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा यह वर्ष गुरु तेग बहादुर के बलिदान का 350वां वर्ष है। हिंद की चादर बनकर गुरु तेग बहादुर ने सांप्रदायिक सद्भाव के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। आज दो अक्टूबर है तो स्वर्गीय महात्मा गांधी की जयंती है अपने स्वतंत्रता की लड़ाई में उनका योगदान अविस्मरणीय है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद भारत कैसा हो उसके बारे में विचार देने वाले हमारे उस समय के दार्शनिक नेता थे उनमें उनका स्थान अग्रणीय है...जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण दिए ऐसे स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री का आज जयंती है। भक्ति, देश सेवा के ये उत्तम उदाहरण हैं। मोहन भागवत ने कहा, सीमा पार से आए आतंकवादियों ने 26 भारतीयों का धर्म पूछकर उनकी हत्या कर दी। इस आतंकी हमले से देश शोक और आक्रोश में था। पूरी तैयारी के साथ



हमारी सरकार और सशस्त्र बलों ने करारा जवाब दिया। सरकार का समर्पण, सशस्त्र बलों का पराक्रम और समाज में एकता ने देश में एक आदर्श वातावरण प्रस्तुत किया। इस घटना और हमारे ऑपरेशन के बाद विभिन्न देशों द्वारा निभाई गई भूमिका ने हमारे सच्चे मित्रों को उजागर किया। देश के भीतर भी ऐसे असंवैधानिक तत्व हैं जो देश को अस्थिर करने का प्रयास करते हैं। संघ प्रमुख ने कहा कि प्रचलित अर्थ प्रणाली के अनुसार, देश आर्थिक विकास कर रहा है। लेकिन प्रचलित अर्थ प्रणाली के कुछ दोष भी सामने आ रहे हैं। इस व्यवस्था में शोषण करने के लिए नया तंत्र खड़ा हो सकता है। पर्यावरण की हानि हो सकती है। हाल ही में अमेरिका ने जो टैरिफ नीति अपनाई, उसकी मार सभी पर पड़ रही है। ऐसे में हमें मौजूदा अर्थ प्रणाली पर पूरी तरह से निर्भर नहीं होना चाहिए। निर्भरता मजबूरी में न बदलनी चाहिए। इसलिए निर्भरता को मानते हुए इसको मजबूरी न बनाते हुए जीना है तो स्वदेशी और स्वावलंबी जीवन जीना पड़ेगा। साथ ही राजनयिक, आर्थिक संबंध भी दुनिया के साथ रखने पड़ेंगे, लेकिन उन पर पूरी तरह से निर्भरता नहीं रहेगी। संघ प्रमुख ने कहा कि प्रजातांत्रिक मार्गों से ही परिवर्तन आता है। हिंसा से उथल-पुथल आती है, लेकिन पूरी तरह से परिवर्तन नहीं हुआ। हाल के समय में विभिन्न देशों में कथित क्रांतियां हुईं, लेकिन कहीं कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हो सका। हमारे पड़ोसी देशों में हिंसक उथल-पुथल होना हमारे लिए चिंता का विषय है। हमारा पड़ोसी देशों के साथ आत्मीयता का संबंध है। इसमें चिंता होती है। मोहन भागवत ने कहा, जब सरकार जनता से दूर रहती है और उनकी समस्याओं से काफी हद तक अनभिज्ञ रहती है और उनके हित में नीतियां नहीं बनाई जातीं, तो लोग सरकार के खिलाफ हो जाते हैं। लेकिन अपनी नाखुशी व्यक्त करने के लिए इस तरीके का इस्तेमाल करने से किसी को कोई लाभ नहीं होता। अगर हम अब तक की सभी राजनीतिक क्रांतियों का इतिहास देखें, तो उनमें से किसी ने भी अपना उद्देश्य कभी हासिल नहीं किया। सरकारों वाले राष्ट्रों में हुई सभी क्रांतियों ने अधिम राष्ट्रों को पूंजीवादी राष्ट्रों में बदल दिया है।

## बलरामपुर में भीषण सड़क हादसे में चार लोगों की मौत, रामलीला देखकर वापस लौट रहे थे

बलरामपुर श्रीदत्तगंज क्षेत्र से रामलीला देख कर दो बाइक से लौट रहे चार लोगों की सड़क हादसे में मौत हो गई। घटना नगर क्षेत्र के उतरौला मार्ग पर कादभारी गांव के पास रात करीब 12 बजे की बताई जा रही है। प्रभारी निरीक्षक सुधीर सिंह ने बताया कि रात करीब 12 बजे हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस के मुताबिक दो मोटरसाइकिल पर तीन - तीन युवक सवार थे, किसी ने हेलमेट भी नहीं पहना था। हादसे में युवकों के घायल होने की सूचना मिली। घायलों को एंबुलेंस से जिला संयुक्त चिकित्सालय में लेकर आए। जहां चिकित्सकों ने चार युवकों को मृत घोषित कर दिया। हादसे में मृतक संजय (25) व अंकित (21) दोनों सगे भाई थे। इसी तरह सीताराम (22), गोलू उर्फ संतोष मौर्य (23) दोनों सगे भाई थे। दोनों की मौत से परिवार में कोहराम मचा है। एक ही परिवार के दो-दो युवकों की मौत से पूरे गांव में मातम छा गया है। चारों युवक महाराजगंज तराई क्षेत्र के मुरादीह गांव के रहने वाले हैं। इसके साथ ही हादसे में वीरेंद्र कुमार मौर्य (24) व दिनेश मौर्य (23) गंभीर रूप से घायल हैं। वीरेंद्र को लखनऊ और दिनेश को बहराइच मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है।